# मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष



डॉ० योगानन्द झा

## The Author



Jha, Yoganand; MA (Maithili & Hindi), Ph.D.; Writer; b January 11, 1955 Kabilpur; W. Kewela; two s and one d; Educ L. N. Mithila Univ; serving in Bihar Electricity Board; Member, Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi, New Delhi 1998-2002; poems and talks broadcasted over AIR, Darbhanga; participated in national seminars; *publs* - Parinceta (1989 poetry); Lokjeevan-o-Lok Sahitya (1986), Aalekh Sanchayan (2002)- crit; Maithili Shakta Sahitya (1996); Sankalpa, Yugdeep Tulsi, Anmol Bhajnavali, Pagdhuli charita ed; Phakir Mohan Senapati (2000), Biharak Lok Katha (2003)- tr; *Awards* Pt. Ramanath Jha Top Literateur Award; Sahitya Akademi Travel Grant 1995, and many felicitations; Address Bhagwati Sthan Marg, Kabilpur, Laheriasarai, Darbhanga - 846001 (Bihar).

## *About his unpublished thesis for Ph.D. Degree*

'Maithilika Paramparika Jatiya Vyavasaya Sambandhee Shabdavalika Vyakhyatmaka Adhyayana'.

*The thesis speaks well of the candidates deligence, critical outlook and aptitude for research in the domain of Maithili. It is a valuable contribution to Maithili literature. From the view points of both matter and style, the scholar deserves commendation. The thesis is worthy of publication.*

***Dr. Prabodh Narayan Singh***
*8.1.1986*
*A-132, Lake gardens, Calcutta-700045*

●

*The thesis written in the Maithili language in based upon a deligent study of the Maithili technical terms used by members of the castes having different family professions like those of carpenters, weavers, basket makers etc.*

*The thesis embodies result of independent investigation envolving prolonged study in interviews with the members of different castes and communities. The writer has examined critically each and every word about which he mentions in his learned thesis, that is a brilliant original contribution to Maithili lexicography.*

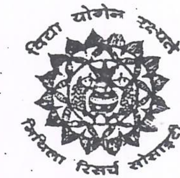
*I would have unhesitatingly recommended the acceptance of this thesis for the D.Litt. Degree in case the University regulations and rules provide for it.*

***Dr. Subhadra Jha***
*20.11.85*
*Nagdah, Madubani*

वितरक
साहित्य निकेतन, न्यू मार्केट, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001 (बिहार)
दूरभाष : 06272-244340, मोबाइल : 9234874593

# मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष

डा. योगानन्द झा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा – 846 001

MAITHILI PATRAKARITA KE SAU VARSHA : An essay on hudred years of Maithili Journalism by Dr. Yoganand Jha 2006, Rs. 25.00




- सौजन्य : श्रीमती नेहा, नीरज कुमार झा
  मंजुश्री
  13, आशीष रिजेन्सी
  पिपल्याहाना, चौहान चौकक निकट
  इन्दौर–452001 (म० प्र०)

- प्रथम संस्करण : 2006

- मूल्य : Rs. 25.00 (पच्चीस टाका) मात्र

- प्राप्ति स्थान : मिलिन्द कुमार झा
  द्वारा, डा. योगानन्द झा
  भगवती स्थान मार्ग
  कबिलपुर, लहेरियासराय
  दरभंगा – 846001
  दूरभाष : 06272-244161
  मोबाइल : 09316123581

- आवरण शिल्प : श्री धीरज कुमार झा

- मुद्रक : सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स
  निकट बहादुरपुर गुमटी
  राजेन्द्रनगर, रोड नं.–13 सी.
  पटना – 800016
  दूरभाष : 0612-2687897
  मोबाइल : 9334370269, 9431004961


# समर्पण



'मैथिलीकेँ' संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे स्थान'क स्वप्नद्रष्टा
'कविक कवि' अभिधाने प्रख्यात
युगसन्धिक कविपुङ्गव, स्वदेशक प्रति प्रतिबद्ध
प्रथम मैथिली दैनिक स्वदेशक अधिष्ठाता
मिथिला मिहिरक मान्य सम्पादकजी
परम श्रद्धेय पण्डित सुरेन्द्र झा 'सुमन'केँ
मैथिली पत्रकारिताक शतवार्षिकी पर
स्मरणपूर्वक समर्पित

—डॉ० योगानन्द झा
विवाह पंचमी
6 दिसम्बर, 2005

## शुभाशंसा



गद्य और पद्य दोनों में समतुल्य डा० योगानन्द झा की सृजनात्मक क्षमता यथार्थ के भावभूमि पर जीवन मूल्य का पक्षधर और पाठकीय संवेदना को झकझोरनेवाली रही है। इनकी लेखनी से निःसृत **'मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष'** मैथिली पत्रकारिता के शताब्दी वर्ष के अवसर पर इनका क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित अनुशीलनपरक मैथिली मन्दिर की गौरवगाथा है जिसे प्रस्तुत कर इन्होंने सहजोपलब्ध धरोहर में रूपायित किया है। मैथिली में दैनिक पत्र के प्रवर्त्तक पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' के सहज सानिध्य में इन्होंने मैथिली पत्रकारिता की गति को निकट से देखा-परखा और भोगा है। यह पुस्तिका उस महामनीषी के प्रति इनकी श्रद्धा-पुष्प कही जा सकती है जो मैथिली पत्रकारिता के संक्षिप्त इतिवृत्त से पाठकों का परिचय करानेवाली है। मैं इनके कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा के प्रति आशावान रहा हूँ।

**शुभास्ते सन्तु पन्थानः।**

चन्द्रेश

**( चन्द्रेश )**
मनमीत कुटीर, राजपूत कॉलोनी
मौलागंज, दरभंगा

गाँधी जयन्ती, 2005

## भव्य ओ दिव्य प्रभा

माता च पार्वती साक्षात्पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।

प्रथम मैथिली दैनिक पत्र **स्वदेश**क स्मरण करैत मोन पाड़ऽ चाहब जे 29 जनवरी 1780 ओ पावन दिवस थिक जहिया कोलकातासँ प्रथम भारतीय समाचार पत्र बंगाल गजट प्रकाशित भेल छल जकरा ओकर प्रवर्त्तक जेम्स ऑगस्टस हिकीक नाम पर हिकी गजटक नामे ख्याति भेटलैक। क्षीण कलेवरसँ युक्त ई साप्ताहिक पत्र यद्यपि किछुए समय धरि चलि सकल तथापि विशाल भारतीय जनसमुदायक प्रतिनिधिक रूपमे एकर उदय एकटा क्रांतिकारी घटना छल जकर पदचिह्न पर चलि साम्प्रतिक भारतीय समाचार पत्र आइ एहि विशाल राष्ट्रक लोकतंत्रक चारिम सुदृढ स्तम्भ बनल देखि पड़ैत अछि।

प्रथम भारतीय समाचार पत्रक प्रकाशनक लगभग सवा सय वर्ष बाद 1905मे मिथिलासँ सुदूरस्थ जयपुर नगरसँ मैथिलीक प्रथम पत्रिका **मैथिल हित साधन**क उदय भेल आ एकर प्रवर्त्तक विद्यावाचस्पति **मधुसूदन झा** मैथिली पत्रकारिताक जनकक उपाधि पओलनि। तहियासँ विगत सय वर्षसँ मैथिली पत्रकारिता समृद्ध व्यावसायिक स्वरूप, जनविश्वासक आधार, निष्पक्षता, संतुलन ओ लोकहितक मानदंड बनबाक अनथक प्रयासमे लागल रहल अछि जकर पुनरावलोकनक आवश्यकता छैक। एही क्रममे एकटा सशक्त प्रयासक रूपमे मोन पड़ैत अछि फरवरी'2002क चेतना समितिक सभागारक मञ्च जतऽ वरेण्य पत्रकार मान्यवर श्रीयुत् श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार जन्मशती समारोह समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक संयुक्त तत्त्वावधानमे द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीक आयोजन भेल छल। **मैथिली पत्र-पत्रिकाक विकास** विषयक एहि संगोष्ठी मे कृपापूर्वक हमहूँ एक गोट आलेखक संग आमंत्रित छलहुँ। हमरा आलेखक विषय देल गेल छल मैथिली मे दैनिक पत्र। साहित्य अकादेमीक आयोजनमे जिज्ञासाक प्रशमनार्थ वक्ता लोकनिसँ प्रश्न करबाक

हेतु पहिल बेर प्रश्नकर्त्तालोकनिकेँ सेहो मानदेय देल जयबाक प्रबन्ध कयल गेल छलनि।

मोन पड़ैत अछि एहि संगोष्ठीमे वरेण्य गुरुवर डा० रामदेवझाक अभिभाषण जाहिमे मैथिलीमे पत्रकारिताक आरम्भक सम्बन्धमे अनुसन्धानपूर्ण वक्तव्यसँ सभागार स्तब्ध रहि गेल छल। हिनके आशीराशिसँ संबलित हमर आलेख अवश्ये मैथिलीक प्रज्ञापुरुषलोकनिकेँ रुचतनि, से विश्वास छल आ से सत्ये सिद्ध भेल। एही क्रममे वरेण्य गुरुवरक दैनिक **स्वदेशक** प्रथमो प्रयोगक संचिकासँ परिचिति स्थापित करबाक सुअवसर भेटल छल तथा मिथिला मिहिरक प्रख्यात सम्पादक सुधांशु 'शेखर' चौधरीजीक पत्रकार आत्मज श्रीशरदिन्दु कुमार चौधरीजीक माध्यमे **मिथिला मिहिर** दैनिकक संचिकाक अवलोकन कऽ कृतकार्य भेल छलहुँ।

मोन पड़ैत छथि वरिष्ठ भौतिकी प्राध्यापक डा० इन्द्रमोहनलाल दासजी जे उपर्युक्त सारस्वत यज्ञमे सहभागीक रूपमे प्रयागसँ आबि रहल छलाह आ एक युगक बाद दुइ गोट बालसंगीक साक्षात्कारक संभावना बनल छल। मोन पड़ैत छथि श्रीअजित कुमार आजादजी जे हमर आलेखमे तर्कक आधार पर नहि, अपितु वाग्विदग्धताक आधार पर किछु आपत्ति करबाक प्रयास कयने छलाह।

मोन पड़ैत छथि डा० श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्र, अनुसन्धान पदाधिकारी, लोकभाषा विभाग, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना जे मैथिली पत्रकारिताक परिचयपरक निबन्धक हेतु आग्रह कयने छलीह आ हुनक आदेशक पुर्त्यर्थ ई निबन्ध छना गेल छल।

मोन पड़ैत अछि **'स्वदेश गोष्ठी'** मे बितायल ओ क्षण सभ जखन पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क संगहि पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा० भीमनाथ झा, श्रीरमेन्द्र नारायण चौधरी, प्रो० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण', देवनारायण झा, प्रो० शिवा कान्त पाठक, डा० सुरेश्वर झा, प्रो० रमाकान्त मिश्र, श्री नुनू बाबु, भूपेन्द्र झा आदिक सहज सान्निध्य प्राप्त रहैत छल। एही गोष्ठीक माध्यमे सुमनजीक स्वदेशक प्रति प्रतिबद्धता, मैथिलीकेँ संविधानक आठम अनुसूचीमे स्थापित देखबाक उत्कट अभिलाषा आ अतिशय वार्धक्यहुमे उत्साहक अतिरेककेँ अनुभव करबाक अवसर भेटैत रहैत छल आ मैथिलीक प्रति यत्किञ्चित भावप्रवणता स्फूर्त्त होइत रहैत छल।

मोन पड़ैत अछि अखिल भारतीय मैथिली-साहित्य-परिषद्, दरभंगाक प्रधानमंत्रीक रूपमे श्रीसुमनजीक द्वारा बहेड़ा अधिवेशन मे 10 फरवरी 1957 कऽ प्रस्तुत प्रतिवेदन



पुस्ती जाहिमे कहल गेल अछि जे '1955 क वर्ष मैथिली साहित्य ओ जनजागरणक इतिहासमे चिरस्मरणीय रहत। एही वर्ष अक्टूबर माससँ परिषद्क पदाधिकारी एवं सदस्यलोकनिक उद्योगसँ मातृभाषामे सर्वप्रथम दैनिक पत्र 'स्वदेश'क प्रकाशन आरम्भ भेल। यद्यपि आकार-प्रकार एवं आर्थिक व्यवस्था सम्पन्न नहि छल तथापि जनता जेना आशतीत रूपेँ एकरा अपनौलक ओ आशाधिक छल। यद्यपि दू हजारसँ अधिक घाटा सहि ई पत्र स्थगित भेल किन्तु मैथिली भाषाक आगाँ एक आदर्श राखि गेल अछि जे यदि एहि प्रकारक चेष्टा सुदृढ आर्थिक भित्ति पर कयल जाइक तँ मैथिलीक क्षेत्रमे नवोन चेतना उत्पन्न करबामे सर्वाधिक प्रयोजनीय बनत।'

मोन पड़ैत छथि, स्वनामधन्य मान्यवर कर्पूरी ठाकुर जे अपन मुख्यमंत्रित्व कालमे बिहार संरकारक पत्र सं.-3/आर-1-1014/77 कैम्प दिनांक 22.12.1977 द्वारा श्री शान्ति भूषण, विधि मन्त्री, भारत सरकारकेँ लिखित रूप सँ ई निवेदन कयने छलथिन जे 'मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे अविलम्ब सम्मिलित कयल जयबाक चाही जाहिसँ बिहारक एहि प्रमुख एवं समग्र भाषाकेँ राष्ट्रीय स्तर पर पूर्ण मान्यता भेटि सकैक तथा एकर सर्वांगीण विकासक हेतु समस्त राजकीय सुविधा भेटि सकैक (मैथिली संघर्ष, जनवरी 1995 प्रयोगांक पृ० 7)।

मोन पड़ैत अछि सांसद सुमनजी द्वारा 02.02.1979केँ राष्ट्रपतिक भाषण पर धन्यवाद प्रस्तावक क्रममे लोकसभा मे बाँचल गेल हुनक अभिभाषण जाहिमे अत्यन्त शालीनतापूर्वक मिथिला-मैथिलीक विकासक दशा दिशा पर प्रकाश दैत कहल गेल छल जे 'भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक मूल्यवान अवदान छैक। किन्तु ओकर भाषा मैथिली आइयो संविधानमे उपेक्षित छैक। जकर बजनिहार 3 कोटि होथि, जकर स्वतंत्र 'तिरहुता' लिपि होइक, जाहिमे चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीसँ गद्य-पद्य एवं नाट्य साहित्यक प्रवाह निरंतर प्रवाहित रहल होइक, जे बिहारक समस्त विश्वविद्यालयमे एम.ए. धरि अध्ययन-अध्यापनक विषय होइक, पचासो डी.लिट्०, पी-एच०डी० उपाधिधारी शोधकार्यमे लागल होथि, बंगाल, काशी, नेपालक विश्वविद्यालयक सभमे जे भाषा रूपमे गृहीत हो; जे पी.ई.एन., साहित्य अकादेमी द्वारा सम्मानित हो, जकर कवि स्वनामधन्य विद्यापतिक पदावलीक अनुवाद अंग्रेजी, रूसी आदि विदेशी भाषा सभमे समादृत रहल हो, ओहि साहित्य-समृद्ध तीन कोटि जनसमुदायक भाषाकेँ संविधानमे एखन धरि स्थान नहि देल जा सकलैक, से सर्वथा चिन्तनीय थिक (श्रीसुमन साहित्य-सौरभ, पृ० 371)।

मोन पड़ैत अछि दैनिक स्वदेशक द्वितीय प्रयोगक्रम, 24 सितम्बर 1983क आठम पृष्ठ पर प्रदत्त **'स्वदेश'क आह्वान** शीर्षकक ई पाँती सभ जाहिमे कहल गेल अछि जे 'साढ़े तीन कोटि मैथिली भाषीक अपन एकोटा दैनिक नहि। मिथिला-मैथिलीकेँ मुख्यता देनिहार समाचार-विचारक दैनन्दिन संवाहक अपन कोनो साधन नहि! किंतु एहि दु:सह अंक-कलंकक परिमार्जन व्यक्ति नहि समष्टिक साध्य थिक। मिथिलाक भू-भागकेँ अपन भाषा-संस्कृति, कला-कौशल, लिपि-शिल्प ओ जीवन-पद्धतिक परिष्कारक संग कृषि-उद्योग, शिक्षा-स्वास्थ्य, यातायात आदिक अभाव-अभियोगकेँ दूर करबाक लेल जाहि सामाजिक, राजनीतिक ओ सांस्कृतिक चेतना जगैबाक अहर्निश आवश्यकता अछि, तकरा स्वर देबा लेल, लोकमतकेँ अभिव्यक्ति देबा लेल, सबल, स्वस्थ, नियमित आ आधुनिक साधनसँ सम्पन्न दैनिकक अनिवार्यताक अनुभव व्यक्ति-व्यक्तिकेँ होइत रहल अछि।...एहि घोर कलियुगमे साहस वा संकल्पसँ, भावना वा भक्तिसँ काज नहि चलैछ। एहि लेल चाही अर्थशक्ति, प्रचुर सहयोग राशि। आइ तकरहु मैथिली भाषी समाजमे कमी नहि। वाग्विलासमे, मनोरंजन-उल्लासमे, प्रदर्शन-प्रकाशमे, डगर-डगर ओ घर-घर मे अर्थ भाफ जकाँ उड़ि रहल अछि। आवश्यकता अछि एहि दिशामे समाजक ध्यान आकृष्ट होयबाक, सार्वजनिक काज मे सामूहिक सहयोग भावना जगबाक।...आस्था ओ पूर्ण विश्वाक संग साग्रह सानुनय अनुरोध जे 'स्वदेश'क साधनाकेँ पूर्णता पर पहुँचैबाक हेतु मातृभाषानुरागी मिथिला मैथिलीक संस्कारी उदार महानुभाव एवं उत्साहप्रवण तरुणवर्ग कृपया अपन सहयोगसँ कृतार्थ करथि जाहिसँ शीघ्र अभावक दुर्दिन दूर हो-बाधाक उमड़ैत मेघ छँटि-छुटि जाय एवं साधनक शरद-स्वच्छ वातावरण प्रस्तुत कऽ सकय। स्वदेशक आह्वान अछि-'तस्य कालोऽयमागत:'!

मोन पड़ैत अछि 1998 मे मान्यवर श्री अटल बिहारी वाजपेयीजीक जितलाक बाद सुमनजी द्वारा हुनका लिखल गेल संवर्द्धनापरक पत्र जकरा स्वदेश गोष्ठीमे बाँचल गेल छल आ संभावित प्रधानमंत्रीसँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक दिसि कनेडेरियहुँ देखबाक आग्रह कयल गेल छल। पत्र सँ ई प्रतिभासित भेल छल जे सुमनजी वाजपेयीजीक प्रति कतेक आस्थावान छलाह आ स्वदेश आ स्वभाषाक उन्नतिक हेतु हुनकासँ कतेक रास आशा रखैत छलाह।

मोन पड़ैत अछि 9 जुन'2003क ओ ऐतिहासिक अवसर जहिया राष्ट्रीय एकताक सूत्रधार मान्यवर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीवाजपेयीजी मिथिलाक एकताक सूत्र



कोसी महासेतुक शिलान्यासक अवसर पर निर्मली कालेज परिसरमे मिथिलाक पाग धारण कय मिथिलाक पागक रक्षाक हेतु अपार मिथिलावासीकेँ आश्वस्त करैत मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम् अनुसूची मे सम्मिलित करबाक हेतु प्रयत्नशील होयबाक वचन देने छलाह आ अपन वचनक अनुरूप दिसम्बर'2003 मे मिथिलाक एहि स्वप्नकेँ साकार कऽ देबामे सफल भेल छलाह।

तद्नुरूप नई दिल्ली, वृहस्पतिवार, जनवरी 8, 2004 पौष 18, 1925क भारतक राजपत्र असाधारण अंक भाग-II खंड-1 द्वारा मैथिलीकेँ 92म संविधान संशोधन विधेयक 2003क माध्यमे संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे 10म भाषाक रूप मे राष्ट्रीय मान्यता प्रदान कऽ देल गेल छल। कहल जाइत अछि जे मान्यवर वाजपेयीजीकेँ उत्प्रेरित करबाक श्रेय तत्कालीन रेलमंत्री मान्यवर श्री नीतीश कुमारजीकेँ जाइत छनि जे प्रो० उमाकान्त चौधरी, डां० अशोक कुमार सिंह आदिक संयुक्त प्रयासक फलस्वरूप श्रीवाजपेयीजीकेँ प्रेरित-प्रभावित करबाक प्रयास कयने छलाह।

मोन पड़ैत छथि साम्प्रतिक बिहारक कर्णधार आ तत्कालीन रेलमंत्री मान्यवर श्रीनीतीशकुमारजी जे मैथिली मंत्रक ध्वनि बहुत पूर्वहिसँ श्रीमान् हुकुमदेव नारायण यादव, डा० पी०पी० ठाकुर, डा० वैद्यनाथ चौधरी, डा० अशोक कुमार सिंह, डा० देवेन्द्र यादव, श्री कीर्ति झा 'आजाद', डा० ताराकान्त झा, श्री संजय पासवान आदिक माध्यमे सुनैत-गुनैत रहल छथि।

की यैह सभ मोन पड़ैत-पड़ैत तँ नें ई पोथी अपने लोकनिक समक्ष अयबा मे सफल भऽ गेल ?

वस्तुत: ई मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे भेल सय सालक प्रयोग सभकेँ विहंगम दृष्ट्या परखि ओकर इतिवृत्तकेँ रेखांकित करबाक विनम्र प्रयास थिक जाहि मे पत्रकारिताकेँ अँग्रेजीक Journalismक पर्यायक रूपमे परिगृहीत कयल गेलैक अछि। जर्नलिज्ममे मुख्यत: वर्त्तमान घटनावली ओ सम्बद्ध व्याख्यासँ जुड़ल सूचना पर जोर देल जाइत रहलैक अछि। स्वभावत: ई शब्द अपन अभिधेयार्थमे दैनिकेक कार्य-पद्धतिक हेतु रूढ़ मानल जा सकैछ। तथापि आजुक सूचना प्रौद्योगिकीक युग मे एहि शब्दमे अर्थव्याप्ति भेलैक अछि आ ई नियतकालावधिक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाक हेतु सूचना संकलन ओ तकर प्रकाशने धरि सीमित नहि रहि गेल अछि अपितु अपन अर्थमे अतिव्याप्तिक कारणेँ सामयिक, अनियतकालीन आदिओ पत्र-पत्रिकाक कार्य-व्यापारकेँ अन्तर्भुक्त कऽ लेलक अछि।

परमपूज्य पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक ग्रन्थ **मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली अकादमी, पटना** तथा मैथिली अकादमी पत्रिका वर्ष 9 अंक 1 मे छपल हुनक निबन्ध 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास : अधुनातन परिप्रेक्ष्यमे' एहि प्रयासक आधारशिला थिक, तेँ लऽ कऽ हिनका प्रति आभारक अभिव्यक्ति अपन धर्म भऽ जाइत अछि। ततः पर एहि पोथी कें पूर्ण करबाक हेतु प्रयत्नक रूपमे विद्यापति टाइम्स, मैथिली पाक्षिक, दरभंगाक (वर्ष 1 अंक 5, 1 फरवरी सँ 15 फरवरी 2006) माध्यमे विज्ञापन दय ई प्रयास कयल गेल जे मैथिली मे रुचि रखनिहार, साहित्यकार ओ पत्रकारलोकनिक कृपासँ मैथिली पत्रकारितासँ सम्बद्ध जानकारीकेँ पूर्ण कयल जा सकय। श्रीशंकरदेवझाक माध्यमे पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क लगभग बत्तीस वर्षीय छायाप्रति प्राप्त कऽ कृतार्थ भेलहुँ तेँ हुनका प्रति धन्यवाद ज्ञापित करैत छियनि। ज्ञातव्य अछि जे एहि समय धरि सुमनजी मान्य पंडित ओ सम्पादकजीक रूपमे प्रख्यात भऽ गेल छलाह। तदुपरि एहि पोथीमे ओहि अधिकांश पत्र-पत्रिकाकेँ समेटबाक प्रयास भेल अछि जे हमरा सन यदाकदा पत्रिका किननिहारकेँ उपलब्ध होइत रहल अछि। तेँ ई सहज संभाव्य अछि जे मैथिली पत्रकारिताक प्रकाशन क्षेत्रमे पसरल अराजकतावश बहुतो पत्र चर्च सँ वञ्चिते रहि गेल हो। एहि वञ्चनासँ मुक्ति पाठकेलोकनिक प्रयासें आ इतरे संस्करणमे संभव भऽ सकैछ।

हम धन्यवाद ज्ञापन करऽ चाहैत छियनि बन्धुवर श्रीप्रदीप बिहारीकेँ जनिक संबन्ध मे सुनल अछि जे एक गोट स्वच्छ, पारदर्शी आ स्वस्थ पत्रक ओरिआओन मे लागल छथि। हिनका सन एकान्त मैथिलीसेवी कवि, नाटककार, कथाकार-उपन्यासकार, रंगकर्मी तथा चतुरंग ओ अन्तरंगक आयोजक पत्रकाररसँ मैथिली पत्रकारिताकेँ बेस संभावना छैक।

एहि अवसर पर मोन पड़ैत छथि बाबा श्रीहरेकृष्णझा जे 1964 मे एम.एल. एकेडमी, लहेरियासरायमे हमर नामांकन करबौने छलाह। मोन पड़ैत छथि डा. रामदेव झा जे 1970 मे हमर रंगकर्मसँ प्रभावित भऽ **नन्दीपति गीतिमाला** प्रदान कऽ प्रोत्साहित कयने छलाह। मोन पड़ैत छथि श्री परमानन्द कका जे पटना मे हमर आतिथ्यक केन्द्र रहैत छलाह। मोन पड़ैत छथि स्व० रामस्वरूप कका जनिक स्नेहपूर्ण संवर्द्धन हमरा आप्लावित कयने रहैत छल। मोन पड़ैत छथि पं० सतीशचन्द्रझा जे हमर



योगक्षेमक संवहनक हेतु सदिखन आतुर रहैत छलाह। मोन पड़ैत छथि ठाकुर लक्ष्मीकान्त जनिक कारणेँ समस्तीपुर हमर आकर्षणक केन्द्र रहल अछि। मोन पड़ैत छथि डा० नरेश कुमार 'विकल' जनिक गीतकारक स्वरूप हमरा मोनसँ नहि हँटैत अछि।

मोन पड़ैत छथि [redacted]क प्रख्यात नाटककार बाबू साहेब चौधरी जे हमर पहिल पुस्तकाकार रचना 'प्रतिशोध' नाटकक प्रकाशनक लिखित आश्वासन देने छलाह। मोन पड़ैत छथि डा० श्री विभूति आनन्द जे प्रथम भेट क्रममे अपन दुइ गोट पोथी उपहृत कऽ अपन लिखल पोथीकेँ प्रकाशित करयबाक उत्कंठा केँ पुनः जाग्रत कऽ देने छलाह। मोन पड़ैत छथि व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' जनिक विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक मञ्च पर '**सय सय गंगाजल सँ धोने नहि छूटय इतिहासक दाग। एक बेर भूलुंठित भेने फेर चढ़य नहि माथा पाग।।**' सुनि हम विभोर भऽ गेल रही। मोन पड़ैत छथि श्रीराजेन्द्र भैय्या जे हमर अस्त-व्यस्त जीवन पद्धतिकेँ सम्हारबाक हेतु अपन कान्ह लगौने रहैत छथि। मोन पड़ैत छथि अधिशासी अभियन्ता श्रीगजेन्द्रजी जनिक सन्निधिमे हमर किशोर वयक कतोक मधुमय क्षण व्यतीत होइत चल गेल छल। मोन पड़ैत छथि '**असमाहि हमर हाथ**'क प्रायोजक श्री उपेन्द्रझाजी जनिक कविता संग्रह कहियो प्रयोगधर्मिताक प्रतीकक रूपमे चीन्हल गेल छल। मोन पड़ैत छथि स्व० रमाकान्त लाल दासजी जनिक 'नान्यदेव' महाकाव्यक कतिपय अंश सूनि ई विश्वास भेल छल जे अवश्ये ई मैथिली महाकाव्यक क्षेत्रमे एक गोट अनुपम अवदान सिद्ध होयत। मोन पड़ैत छथि स्व० बुच्चन रजक जे हमर पी-एच्०डी० शोध प्रबन्धक परिपूर्णताक हेतु जातीय व्यवसाय सभक शब्द-संचयन एवं जातीय देवताक परिचय ओ गहबरगीतक अन्वेषणक क्रम मे रने-बने संग दैत रहल छलाह। मोन पड़ैत छथि सुहृद्वर श्रीवीरेन्द्रलाभ जी जे हमर मैथिली दिस उन्मुखताकेँ श्रीमती वाणीलाभक उदाहरण दऽ कऽ उकसबैत रहैत छलाह।

मोन पड़ैत छथि मिथिलामे रामाश्रयी भक्ति परम्पराक रसिकाचार्य स्व० कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' जनिका संग 1988 मे गामक रामजानकी मंदिर पर रामचरितमानस नवाह्नपारायणक अवसर पर किछु समय बितयबाक संयोग लागल

छल। हुनक आशुकवित्व सँ प्रभावित भऽ हुनका अरियातैत लहेरियासराय टावर धरि चलि गेल रही। तत:पर ओ कन्हैयालाल कृष्णदासक दोकानसँ अपन **'वैदेही विवाह संकीर्त्तन'**क पाँच गोट प्रति थम्हा देने रहथि आ एकटा प्रति पर अपन शुभकामना प्रकट करैत लिखने रहथि जे 'चि० भावपुत्र श्री योगानन्दझाकेँ ई पोथी आशीर्वाद रूप मे प्रदान करैत छियनि जे सतत हिनक परिवारक सदिखन मंगल करैत रहतनि।' मोन पड़ैत छथि आधुनिक मैथिली साहित्यक एक गोट विशिष्ट स्तम्भ स्व० डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण' जनिकासँ प्रथम भेटक अतिरिक्त लाभक रूपमे हुनका द्वारा संचालित **'सत्य सन्देश'** पत्रिकाक प्रति एवं पुस्तककार **'चन्द्रग्रहण'** उपन्यासिका पाबि धन्य भेल छलहुँ।

मोन पड़ैत छथि पं० गोविन्द झा जे **दीनबन्धु स्मृति ग्रन्थ, नखदर्पण, विद्यापतिक आत्मकथा, मिथिला भाषा विद्योतनादि** आशीर्वचनपूर्वक प्रदान कयने रहथि। मोन पड़ैत छथि डा० रमानन्द झा 'रमण' जे नव वर्षागम केँ मोन पाड़ि देल करैत छथि। मोन पड़ैत छथि डा० उमाकान्त जे हमर रचनाकेँ उपरो-झाँपड़ देखि पुल बान्हि प्रोत्साहित करैत रहैत छथि। मोन पड़ैत छथि श्री चन्द्रेशजी जे हमर रचनावली देखैत देरी ओकर प्रकाशनक मार्ग प्रशस्त करबाक उद्यममे व्यस्त भऽ जाइत छथि। मोन पड़ैत छथि श्रीरामचन्द्र चौधरी जी जे 'महामति विदुर' प्रदान कऽ मैथिली लेखनक आयामक परिचय देने रहथि। मोन पड़ैत छथि श्री केदार कानन, किशोर केशव, प्रो० खुशीलाल झा ओ डा० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' जे लोकनि लक्ष्मीनाथ गोसाञिजीक सन्तकाव्यक व्यापक परिचय प्राप्त करयबामे पूर्ण सहयोग देने छलाह। मोन पड़ैत छथि पथिक पियासल आ कुचक्रक उपन्यासकार श्री विजेन्द्र कुमार मिश्रजी जे कोरियरक माध्यमे अपन सद्य: प्रकाशित कविता संग्रह 'आब की कहैत छी' पठौलनि। मोन पड़ैत छथि बन्धुवर श्री राजकुमार मिश्रजी जे झारखंडक सुदूर प्रदेशहुमे रहैत स्मरण कऽ लेल करैत छथि। मोन पड़ैत छथि मैथिली क्षेत्रक वरेण्य अभिनेत्री एवं साहित्यकार ममतामयी श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'जी जे मैथिली मे रंगकर्म आदर्श शिक्षिकाक संगहि अपन मातृभाव सम्पन्नतासँ परिकरकेँ आकृष्ट कएने रहैत छथि। मोन पड़ैत छथि स्वनामधन्य डॉ० हरिवंश 'तरुण' जी जनिक अहैतुकी ओ सहज स्नेह हमरा ओहिना बरसैत बुझना गेल अछि जेना कहियो श्रीसुमनजीक बरसैत रहैत छल। मोन पड़ैत छथि गुरुवर श्री लक्ष्मण चौधरी 'ललित'जी जे अपन विरल पोथी 'मैथिली



महाकाव्य पर पौराणिक प्रभाव' प्रदान कऽ कृतार्थ कयने रहथि। मोन पड़ैत छथि 'मिथिला महान'क वरेण्य सम्पादक श्री अर्जुन नारायण चौधरी जी जे अपन पत्रिकाक प्रत्येक अंकमे हमर उपस्थिति देखऽ चाहैत छथि। मोन पड़ैत छथि डा० महेन्द्र नारायण रामजी जनिक विनयशीलताक प्रति हम अभिभूत रहैत छी। मोन पड़ैत छथि श्री फूलचन्द्रझा 'प्रवीण' जी जे हमर शब्द-सामर्थ्यकेँ माटि देबाक लेल फाँड़ भिड़ने रहैत छथि। मोन पड़ैत छथि श्रीधीरेन्द्रनाथ मिश्रजी जनिक भयेँ हम वर्त्तनीक प्रति सतर्क रहबाक प्रयास करैत छी। मोन पड़ैत छथि श्री मदनजी आ मोदनारायणझाजी जे पटना आ मधुबनी प्रवासमे हमरा प्रति सेव्य भाव राखि हमरा लज्जित करैत रहलाह। मोन पड़ैत छथि श्री सूर्यदेव रायजी जे गया प्रवासक क्रममे रश्मिरथीक दुइ गोट कण्ठाग्र सर्ग सुनाय हमरा मुग्ध कऽ देने छलाह। मोन पड़ैत अछि **नेहा** आ **मंजुश्री** अपार्टमेण्ट मे बिताओल ओ क्षण सभ जे हमर जीवनयात्राक हेतु अविस्मरणीय रहत!

मैथिलीक यज्ञमे निरन्तर आहुति प्रदान कयनिहार होतालोकनिक विशाल समूहमे सभक नामावली प्रस्तुत करब ने संभव, ने अभीष्ट आ ने सभ सँ अन्तरंग परिचये, तथापि किछु विशिष्ट-परिशिष्टक उल्लेख करब एतऽ अप्रासंगिक नहि मानल जायत यथा-मोन पड़ैत छथि श्री तारानन्द वियोगीजी जनिका लाथेँ मण्डनमिश्रधाम आ उग्रतारा भगवतीक दर्शन भऽ सकल। मोन पड़ैत छथि कोसी क्षेत्रक प्रसिद्ध सम्पादक श्री केदारकाननजी आ प्रबन्ध सम्पादक श्रीतारानन्द झा 'तरुण'जी जे सुपौल मे हमर वृत्तिजन्य प्रवासक क्रमकेँ **'अपन साहित्यकार सँ भेंट'** मे बदलने रहलाह। मोन पड़ैत छथि श्रीरमेशजी जनिक सरस गीत ओ निगूढ़ साहत्यिक प्रयोग सभसँ मिथिला आ मैथिली आन्दोलित-हिन्दोलित रहलीह अछि। मोन पड़ैत छथि श्रीमती मालाझा जे सहधर्मिताक प्रतीक बनलि- 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनमे भाग लैत रहलि छथि तथा महिला लेखिका लोकनिक सङोर करबा मे सिद्धहस्तता प्रमाणित कयलनि अछि। मोन पड़ैत छथि श्रीनारायणजी, घोघरडीहा जे मैथिली पोथीकेँ बिकैत देखि तेना सन्न रहि गेल छलाह, जेना कोनो अप्रत्याशित घटना भऽ गेल होइक। मोन पड़ैत छथि श्रीनन्द कुमार मिश्रजी एवं श्री शिव प्रसाद यादवजी जे भागलपुरक तथाकथित अंगिका क्षेत्रमे मैथिलीक ध्वजदण्ड बनल छथि।

अन्तमे हम महात्मा तुलसीदासक एहि पाँती सभकेँ उद्धृत करबाक लोभक संवरण नहि कऽ पाबि रहल छी-

व्यास आदि कवि पुंगव जाना। जिन्ह सादर हरि चरित बखाना।
चरण कमल बंदउँ तिन्ह केरे। पुरबहुँ सकल मनोरथ मेरे॥
कलि के कविन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा॥
जे प्राकृत कवि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने॥
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगे। प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागे॥

आ हुनके अनुसरण करैत मैथिली पत्रकारिता आन्दोलनक तुलसी वृक्षक ओहि समस्त दलक प्रति प्रणति निवेदन करैत छी जनिका सभक प्रयासें मैथिली पत्रकारिता अपन भव्य ओ दिव्य प्रभा छिरियबैत रहल अछि, खाहे पुर्जी पत्रिकाक रूपमे, खाहे विशाल दैनिकक आकार-प्रकारमे, खाहे एकांकीक रूपमे, खाहे वर्षानुवर्ष नियमित प्रकाशनक अभिलेखक संग।

मैथिली पत्रकारिताकें वृहत्तर राष्ट्रीय फलक धरि प्रचारो साहित्य जकाँ लऽ जयबामे जँ ई पोथी कनेको सफल भऽ सकल तँ हम अपन श्रमकें सफल बूझब। इति शुभम्।

योगानन्द झा
(डा. योगानन्द झा)
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001

विवाह पञ्चमी
8 मार्च' 2006



# मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष

ईस्वी सन् 2005 मैथिली पत्र-पत्रिकाके प्रकाशनका ऐतिहासिक वर्ष है क्योंकि यह इसके प्रकाशन के सौवें साल का प्रतिनिधित्व करता है। यूँ तो मैथिली पत्र-पत्रिका के प्रकाशन का सूत्रपात 1901 ई० में ही हो चुका था जब मुजफ्फरपुर निवासी अयोध्या प्रसाद खत्री ने जो खड़ी बोली के तत्कालीन महारथियों में एक थे, तिर्हुता पत्र निकालने का मानसिक संकल्प लिया था (देखिये, अयोध्या प्रसाद खत्री स्मारक ग्रंथ, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1960, पृ० 253)। वस्तुत: 'खत्रीजी की इच्छा थी कि हिन्दी प्रचार के लिए तीन मासिक पत्रिकाएँ निकाली जाँय। 26 फरवरी, 1901 को इस सम्बन्ध में उन्होंने बाबू श्याम सुन्दर दास को एक पत्र भेजा था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि उनका इरादा एक नहीं, तीन पत्र निकालने का था- 'खड़ी हिन्दी'; 'अदालती हिन्दी' और 'तिरहुत'। बताया जाता है कि तिरहुत और खड़ी हिन्दी के लिए उन्होंने डेक्लेरेशन भी ले लिया था। परन्तु वे यह योजना कार्यरूप में परिणत कर ही रहे थे कि उनका देहान्त हो गया' (तत्रैव, पृ० 313)। और इस प्रकार विगत शताब्दी के प्रथम वर्ष में मैथिली में पत्रकारिता की संकल्पना को यथार्थ रूप नहीं दिया जा सका। इस सम्बन्ध में आधुनिक मैथिली साहित्य के प्रवर्तक चन्दा झा तथा स्वनामधन्य खत्रीजी के बीच जो पत्राचार हुआ था वह मैथिली में पत्र-पत्रिका के प्रकाशन की ओर उन्मुखता का ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसे श्री शंकरदेव झा रचित **'अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार'** पोथी के पृष्ठ सतरह-अठारह पर देखा जा सकता है।

**मैथिली में पत्रिका के प्रकाशन** की खत्रीजी की संकल्पना 1905 ई० के **प्रारम्भिक महीनों में ही साकार होकर सामने आई।** इसे साकार करने का श्रेय प्राप्त हुआ **विद्यावाचस्पति मधुसुदन झा को जिन्हें मैथिली पत्रकारिता का जनक** भी कहा जा सकता है। मधुसूदन झा जयपुर स्टेट के राजपण्डित थे। स्वभावत: वृत्ति के लिये प्रवासस्थ इस पण्डित ने प्रवासी मैथिलों को सूत्रबद्ध करने के अन्यतम प्रयास के रूप में यह प्रयोग किया होगा। तभी तो जिस संस्था के माध्यम से उनके सम्पादन में मैथिली की पहली मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, उसका नाम उन्होंने 'मैथिल हित साधन समिति' रक्खा था और पत्रिका का नाम भी रखा गया था **'मैथिल हित साधन'**।

सम्पादक का कर्मक्षेत्र होने के कारण मैथिली की इस प्रथम पत्रिका ने भारतवर्ष के गुलाबी शहर जयपुर में जन्म लिया। इसके सुवास ने आवासी-प्रवासी सबों को मिथिला की सारस्वत-साधना की परम्परा को युगीन सन्दर्भ में अजीब स्फूर्ति प्रदान की थी।

मैथिल हित साधन के प्रकाशन से आरंभ मैथिली पत्रकारिता ने अपने सौवें शरद् के दर्शन के क्रम में अनेक उच्चावच्च पथों को पार किया है तथा मैथिली भाषा-साहित्य के विकास-प्रकाश का मार्गदर्शन करनेवाली अखण्ड दीपक के रूप में अद्यावधि प्रज्वलित रही है। इस दीर्घ अवधि में विभिन्न उद्देश्यों एवं प्रयोगों के रूप में विभिन्न कालावधियों की सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं का उदय और अवसान होता रहा है। मैथिली भाषा-साहित्य के विकास के मूल उद्देश्य से प्रेरित इन पत्रिकाओं का प्रकाशन भाषा-आन्दोलन के रूप में परिगृहीत एवं संचालित रही है। फिर भी ज्ञान और विज्ञान, कला और साहित्य, दर्शन और आध्यात्म, राजनीति और अर्थनीति, समाजशास्त्र और इतिहास, संघर्ष एवं क्रान्ति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति एवं दुर्गति के प्रवाहों; दैनन्दिन जीवन की चिन्ताओं एवं संघर्षों; भोजन-फैशन, स्वास्थ्य-सौन्दर्य, स्त्री-बच्चे, विवाह-प्रेम, विनोद-विलास, कला-विज्ञान, सिनेमा-नाटक, अभिनय-नृत्य, व्यायाम-खेल, व्यापार-व्यवसाय आदि मानव जीवन के विविध अंगों एवं पहलुओं; समस्याओं एवं उनसे निजात पाने के उपायों की वृहत्तर सीमा एवं क्षेत्र आज भी मैथिली पत्रकारिता आन्दोलन से अछूता है और इसका समाजीकरण नहीं हो पाया है। यह आज भी वर्गीय उपादान ही बनी हुई है। स्वभावतः इसने अद्यावधि वह क्षमता नहीं अर्जित की है जो पत्रकारिता का मानदंड है तथा जिसके लिये आवश्यक है कि नित्यप्रति घटनेवाली घटनाओं, प्रवहमान विचारधाराओं एवं उसपर टीका-टिप्पणियों का संकलन, सम्पादन, प्रकाशन एवं वितरण करते हुए मानव समाज को प्रतिबिम्बित, उत्प्रेरित एवं प्रभावित किया जाय।

फिर भी मैथिली पत्रकारिता की स्थिति हतोत्साह करनेवाली नहीं कही जा सकती। इसने मैथिली भाषा के मौलिक स्वरूप का संरक्षण, वर्तनी का मानकीकरण, साहित्य का सम्वर्द्धन एवं भाषित चेतना के पल्लवन में विशिष्ट योगदान दिया है। आज मैथिली कथा-कविता, उपन्यास-महाकाव्य, एकांकी-नाटक, संस्मरण-रिपोर्ताज, जीवनी-फीचर, साक्षात्कार-समीक्षा, यात्रा-आलोचना आदि जितनी भी विधायें राष्ट्रीय साहित्य के समतुल्य रहते हुए निरन्तर प्रगति पथ पर आरूढ़ हैं, उसका श्रेय पत्रकारिता को ही जाता है। मिथिला-मैथिली के अतीत की व्याख्या, वर्त्तमान का आकलन एवं संस्कार तथा भविष्य के मार्ग-निर्देशन में मैथिली पत्रकारिता की प्रमुख भूमिका रही है। मिथिला क्षेत्र की विविध समस्याओं के निदान के लिये राष्ट्रीय एवं प्रांतीय राजनीति को



प्रभावित करने में भी इसकी अहम् भूमिका रहीहै। मिथिला के लोकमत की अभिव्यक्ति का यह सशक्त साधन रही है तथा दुर्निवार सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं आडम्बरों पर प्रहार का पहल भी किया है। 'यह बात अलग है कि प्राकृतिक आपदाओं से संत्रस्त; गरीबी, भूख, बेरोजगारी, अशिक्षा एवं पलायन से सीदित मिथिला के लोकजीवन तक इसका प्रवेश आज भी नहीं हो सका है। तभी तो ढाइ दशक पूर्व **पं० श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'** जी की यह अवधारणा आज भी मैथिली पत्रकारिता के सम्बन्ध में सौ प्रतिशत सत्य ही बनी हुई कि '**मैथिली** पत्रकारिता के इतिहास तथा पत्र-पत्रिका के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मैथिली पत्रकारिता अभी तक प्रयोगात्मक प्रक्रिया के जाल से बाहर नहीं हो पायी है। पत्रकारिता का चरम विकास दैनिक पत्र के रूप में होता है जिसका आज तक अभाव जैसा ही रहा है। वस्तुतः मैथिली पत्रकारिता की आज तक की उपलब्धि इतनी ही कही जा सकती है कि इसने पत्रकारिता के विकास की संभावनाओं को आजतक जीवन्त बनाये रखा है (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ० 10)।

मैथिली पत्रकारिता के इस शतवार्षिकी में इस क्षेत्र में कृत कार्यों की झलक एवं उपलब्धियों के निर्देशन हेतु यह सौविध्यपूर्ण होगा कि इस अवधि में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं पर अलग-अलग खण्डों में विचार किया जाय। प्रयोग के इस दीर्घ अन्तराल में मैथिली में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, आकस्मिक, अनियतकालीन एवं वार्षिक कालावधियों की विभिन्न पत्रिकायें प्रकाशित, कालकवलित एवं पुनरूत्थित होती रही हैं। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता आन्दोलन की उस दृष्टि पर भी विचार करना अपेक्षित होगा जिससे प्रेरित होकर मैथिली पत्रकारिता आन्दोलन ने ग्रामाञ्चलों को भी हस्तलिखित पत्रिकाओं के माध्यम से आच्छादित करने का भावुक प्रयास किया था।

## दैनिक पत्र

यद्यपि आज के सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में भी मैथिली में आज की तिथि में कोई दैनिक पत्र नहीं है किन्तु इस भाषा में दैनिक पत्रों के प्रयोग का गौरवशाली इतिहास है। अपने दो दैनिक पत्रों क्रमशः**स्वदेश** और **मिथिला मिहिर** के माध्यम से मैथिली ने अपनी राष्ट्रीय भाषिक क्षमता का परिचय प्रस्तुत किया तथा मैथिली भाषा को भी अभिव्यक्ति के भव्य मंच के रूप में लोकजगत के समक्ष रखा।

## स्वदेश

1905 मे जयपुर से प्रकाशित प्रथम मैथिली पत्र 'मैथिल हितसाधन' के प्रकाशन के बाद मैथिली पत्रकारिता ने भाषिक आन्दोलन का स्वरूप लिया और क्रमशः काशी,

दरभंगा, कानपुर, इलाहाबाद, कलकत्ता आदि अनेक केन्द्रों से मैथिली पत्रों का प्रकाशन होने लगा। दरभंगा से पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' के सम्पादकत्व में जनवरी 1948 मे **'स्वदेश'** नामक मासिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया गया जिसका केवल छः अंक ही प्रकाशित हो सका। साधन के अभाव में असमय कालकवलित इस पत्र को जीवित न रख पाने की पीड़ा एवं मातृभाषा के प्रति प्रतिबद्धताजन्य भावुकता से ग्रस्त सुमनजी ने अन्यान्य भाषाओं के भव्य दैनिकों से स्पर्धा करते हुए 9 अक्टूबर 1955 से मैथिली में प्रथम दैनिक 'स्वदेश' का प्रकाशन शुरू किया। 11" × 8" के चार पृष्ठों का यह पत्र मासिक स्वदेश की साहित्यिकता से विपरीत समाचार-विचार के संवाहक के रूप में सामने आया। उस समय इसे मिथिला भाषा का ही नहीं प्रत्युत् उत्तर बिहार का प्रथम दैनिक होने का गौरव प्राप्त था। 27 दिसम्बर 1955 तक प्रकाशित कुल पैंसठ अंकों के आधार पर ही यह पत्र मैथिली के अस्तित्व रक्षा, मिथिला के लोकजीवन की अस्मिता, मौलिक अधिकारों के प्रति जागृति तथा लोकशिक्षण का मार्गदर्शक संदेशवाहक सिद्ध हुआ। इसके अग्रलेखों एवं सम्पादकीयों ने लोकजीवन में जागृति एवं राजनीतिक चेतना का मन्त्र फूँका तथा तत्कालीन नियन्ताओं को मिथिला के विकास की प्रेरणा दी। इसके समाचार महत्वपूर्ण, उत्तेजक, समसामयिक, ज्ञानवर्धक, रोचक एवं परिवर्त्तनकारी होते थे। 'लोकमत' शीर्षक के अधीन इसमें पाठकों के पत्रों को स्थान दिया जाता था। इसके शीर्षकों में मैथिली के रूढ़ शब्दावली के प्रयोग के साथ ही लोकप्रचलित शब्दों को भी स्थान प्राप्त था। कुछ विशिष्ट शीर्षक 'चुनावमे एडहॉक कमीटी बनबाक संभावना ?'; 'उद्जन बम परीक्षण'; 'खजौलीमे गोली'; 'नटुआक वेष में डकैतःगोनरिमे लपेटल बन्दूक भेटल'; 'दिल्ली दलमलित' आदि द्रष्टव्य हैं। इसके व्यंग्य स्तंभों में ग्राम्य भाषाओं के नमूनों के द्वारा इसे जनसामान्य के निकट लाने एवं ग्राम्य भाषा को शास्त्रीयता प्रदान करने का प्रयास किया गया। साहित्य के नाम पर इस पत्र के इस प्रयोगक्रम में केवल दो कविताओं को ही स्थान मिल सका जिसमें पहला है **लोकपति सिंह** रचित 'जय जय स्वदेश' जो प्रारंभिक अंक के तृतीय पृष्ठ पर छपा तथा द्वितीय है 6 दिसम्बर 1955 अंक के चौथे पृष्ठ पर छपा **काशीकान्त मिश्र 'मधुप'** की कविता- 'बहेड़ाक रक्तदानी छात्र।'

इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर इयर पैनल में बायें तरफ वाल्मीकि तथा व्यास की तथा दाहिने तरफ विद्यापति और तुलसी की एक-एक सदूक्ति दी जाती थी जिसका स्वरूप इस प्रकार था-

'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।' -वाल्मीकि



'यदर्थं जननी सूते तस्य कालोऽयमागतः' । - व्यास

'बालचंद विज्जावइ भासा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा' । - विद्यापति

'ताते मैं अति अलप बखाने
थोड़े महु जानिहहि सयाने' - तुलसी

ये चारों सदूक्तियाँ ही पत्र के प्रकाशन की मौलिक भावना का उद्‌भेदन कर देती हैं। तभी तो कवि सुमन ने अपनी पहली सम्पादकीय मे ही लिख दिया था कि 'महतो महीयान्'क युग मे 'अणोरणीयान'क की संगति से मन्त्रद्रष्टा पुछल जाथु।' वे जानते थे कि बड़े-बड़े समाचार पत्रों के उस युग में 'स्वदेश' जैसे पत्रों से कौन सा क्रान्तिदर्शन संभव था ? किन्तु वे अपनी मातृभाषा को दैनिक पत्र विहीन नहीं देखना चाहते थे और अपने उस संकल्प की बलिवेदी पर अपना सबकुछ समर्पित कर देना चाहते थे। तभी तो उन्होंने न बुनियादी साधनों की परवाह की और न अपनी शक्ति को ही तोलकर देखा और एक ऐतिहासिक अभियान मे जुट गये। परिणामतः यह दैनिक उन्हें 22 दिसम्बर 1955 के बाद स्थगित कर देना पड़ा। फिर भी, इसे आज भी समाचार-विचारों की संवाहिका प्रथम मैथिली दैनिक की गरिमा, सुमनजी की संक्षिप्त एवं गंभीर सम्पादकीयों, अमरजी के व्यंग्यस्तंभों तथा दैनिक पञ्चांग, गृहस्थोपयोगी सूचनाओं, रेलवे समय सारणी के दैनिक प्रसारणों, फिल्मलोक, दरभंगा बाजार भाव, खेलधूप स्तंभों आदि के कारण प्राप्त थी और इसे पूर्ण मैथिली दैनिक के दस्तावेज के रूप में स्मरण किया जाता रहा है।

दैनिक स्वदेश के उपर्युक्त प्रथम प्रयत्न के विफल होने के ढाइ दशकों के बीत जाने के बावजूद जब मैथिली में कोइ दूसरा दैनिक पत्र नहीं आ सका तो एकबार पुनः सुमनजी ने ही अपने **'मैथिली मन्दिर'** प्रेस के संबल एवं स्वदेशगोष्ठी के लोगों के उत्साह से प्रेरित होकर 15 अगस्त 1981 से इसका पुनः प्रकाशन प्रारंभ किया। किन्तु उनका यह प्रयोगक्रम भी 16 अक्टूबर 1983 तक ही येन-केन-प्रकारेण चल सका। स्वभावतः यह पत्र कभी तो आठ पृष्ठों का हो जाता था तो कभी दो ही पृष्ठों से काम चला लिया जाता था। इसकी सामान्य पृष्ठ संख्या चार ही थी। इसका निबन्धन भी हो गया था और संख्या थी डी०बी०एन०-13, आर०एन० 39582/82 । इसका आकार भी त्रिनियमित नहीं रहा। कभी तो यह 17" × 14" तो कभी 15"×15" और कभी 12"×8" आकार के कागज पर छपता था। सम्पादकीयों, अग्रलेखों एवं व्यंग्य स्तम्भों की दैनन्दिन अनिवार्यताका निर्वाह भी इसमें देखने को नहीं मिलता। इसमें अनुलिखित व्यास की

उक्ति को भी परिवर्तित कर 'यदर्थं जननी सूते तस्य कालोऽयमागतः' कर दिया गया था। इसके चौथे पृष्ठ पर बहुधा उल्लिखित रहता था-

एक कप चाह चाहे दू खिल्ली पान।
छोड़ि कऽ सकैत छी स्वदेश केर मान।।
पाठ जे पढ़ैत छी पढ़ैत अपन जाउ।
किन्तु मातृभाषा कें बिसरू ने बाउ।।

इस प्रकार इस प्रयोगक्रम में स्वदेश समाचार-विचार की संवाहिका से अधिक मातृभाषा प्रेम की कसौटी बनी रही। फिर भी इसके स्तम्भ विश्वमंच, सुभाषित, अमृतवाणी, कतरन ओ सिकताकण, विचार-चर्चा, मिथिलांचलक चहल-पहल, स्थानीय, लोकमत, यत्र-तत्र-सर्वत्र, अभाव-अभियोग आदि अत्यन्त आकर्षक एवं संरक्षणीय-स्पृहणीय हैं। चेलारामक चौल, पुन्नी पाठकक पसाट, खोखाइसिंहक खखास, उचितरामक उचिती, कैलूरामक कूही आदि व्यंग्य स्तंभों ने जिसके लेखक पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' हुआ करते थे, इसे अमरत्व प्रदान किया हुआ है। इस प्रयोगक्रम की सर्वाधिक विशेषता, विवशता या उद्देश्य की क्षरणता यह रही कि यह दैनिक होते हुए भी अन्य मैथिली पत्रिकाओं की भाँति ही साहित्य को बहुलता से अंगीकार करती चली गयी जिसके परिणामस्वरूप कविता, कथा, संस्मरण, हास्य-व्यंग्य, आलोचना, लोकसाहित्य तथा विविध विषयक निबन्धों को इसके माध्यम से प्रकाशित होने का भी अवसर प्रदान किया जा सका। इसके साहित्यिक रचनाकारों में जीवकान्त, रामचैतन्य धीरज, दुर्गाकुमारी झा, देवेन्द्र झा, गोविन्द झा, माधव कश्यप, विद्याधर मिश्र, सिंहवाड़ानन्द, उर्मिलेश, धीरेन्द्रनाथ मिश्र, रामदेव झा, योगानन्द झा, केवला झा, हरिमोहन झा, राधानन्द झा, रामनन्दन मिश्र, शशिनाथ झा, प्रबोध कुमार झा, एल०पी० सिंह आदि उल्लेखनीय हैं।

**मिथिला मिहिर दैनिक**

1909 ई० में मिथिला मिहिर नाम का एक साप्ताहिक पत्र दरभंगा से प्रकाशित होना शुरू हुआ था जो कई वर्षों तक बन्द रहने के बाद 1960 ई० से पटना से प्रकाशित होने लगा। 20 फरवरी 1984 से यह पत्र दैनिक के रूप में सामने आया। अवकाश के दिनों को छोड़कर मैथिली का यह तत्कालीन एकमात्र तथा ऐतिहासिक क्रम में दूसरा दैनिक था। यह दैनिक वस्तुतः '**दी न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड,** मजहरूल हक पथ, पटना के हिन्दी एवं अंग्रेजी दैनिकों क्रमशः **आर्यावर्त्त** और **इण्डियन नेशन** का अनुषंगी प्रकाशन था। स्वभावतः इसे वे सारी सुविधाएँ प्राप्त थीं जो उपर्युक्त दोनों दैनिकों को थीं और इस प्रकार यह दैनिक समाचार-विचार सेवा की दृष्टि



से मैथिली का वास्तविक दैनिक पत्र साबित हुआ। किन्तु दुर्भाग्य से यह दैनिक भी 15 जून 1986 तक ही प्रकाशित हो सका। प्रारंभ में इसके सम्पादक थे हीरानन्द झा 'शास्त्री'; किन्तु 9 मई 1984 से सम्पादक का कार्यभार श्री गजेन्द्र नारायण चौधरी को दिया गया था। इसका सामान्य अंक चार पृष्ठों का होता था तथा आकार था 16"×11"। आकार की लघुता से इसकी क्षेत्रीय भाषिक परिचिति स्पष्ट हो जाया करती थी। इसमें प्रमुख समाचारों को प्रथम पृष्ठ पर स्थान दिया जाता था तथा सामयिक प्रसंग, देश विदेशक हालचाल आदि शीर्षकों से गौण समाचार दिये जाते थे। 'बौक भेल ठाढ़ छी' शीर्षक से इसमें दिया गया राजनीतिक व्यंग्य अत्यन्त तीक्ष्ण हुआ करता था।

इस दैनिक के गुरुवासरीय एवं रविवासरीय अंकों में चार पृष्ठ अतिरिक्त दिये जाते थे जिनमें सिनेमा, खेलकूद, राशिफल आदि के साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं का प्रकाशन किया जाता था। इसका एक वार्षिकांक 32 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ था जिसमें 'मिथिला मिहिरक 75 वर्षक यात्रा'; 'गौरव स्तम्भ:मिथिला मिहिर'; 'मिथिला मिहिरक देन'; 'मैथिली पत्रकारिताक संघर्ष' आदि निबन्ध जो क्रमशः सुधांशु शेखर चौधरी, राधाकृष्ण चौधरी, सत्यनारायण मेहता एवं विभूति आनन्द द्वारा लिखे गये थे, ऐतिहासिक महत्त्व के हैं।

मिथिला मिहिर दैनिक के रूप में लगभग सवा दो साल तक मैथिली दैनिक का प्रतिनिधित्व कर इस भाषा के दैनिक का मानदण्ड बना रह सका क्योंकि सम्पादकीय अग्रलेखों, शीर्षकों का गठन, समाचारों का वर्गीकरण, स्थान निर्धारण एवं प्रस्तुतीकरण; फीचर एवं व्यंग्यलेखन, साज-सज्जा, मंजूषा, विज्ञापन आदि दैनिक पत्र के विविध अंगो-उपांगों की दृष्टि से यह पूर्ण दैनिक था।

## अन्य पत्र-पत्रिकायें

मैथिली में प्रथम प्रकाशित पत्रिका की आवृत्ति मासिक थी और इस आवृत्ति की पत्रिकाएँ सर्वाधिक लोकप्रिय रही हैं। इस आवृत्ति की पत्रिकाओं की संख्या भी सर्वाधिक रही है। मैथिली में प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिकाओं में मैथिल हित साधन, मिथिला मोद, भारती, विभूति, स्वदेश, वैदेही, मिथिला दर्शन आदि प्रमुख हैं जिन्होंने मैथिली पत्रकारिता को एक दिशाबोध देने का कार्य किया था। इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त भी अनेक पत्रिकाएँ मैथिली के माध्यम से प्रकाशित हुईं तथा इन्होंने भी मैथिली भाषा-साहित्य के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इन पत्रिकाओं ने समाचार-विचार की अपेक्षा मैथिल समाज एवं उसके साहित्य के विकास को अपना उद्देश्य बनाया और इस उद्देश्य की प्राप्ति में सफल भी हुईं।

## मैथिल हित साधन -

पूर्व में ही कहा जा चुका है कि यह पत्रिका मैथिली की प्रथम पत्रिका थी जो जयपुर से प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका के नाम से ही स्पष्ट है कि इसका ध्येय मिथिला के लोगों का कल्याण साधन था। अपने ध्येय की प्राप्ति के लिये इसने मिथिला समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया था। इस पत्र के माध्यम से व्याकरण, गणित, भूगोल आदि की बालोपयोगी पुस्तकें प्रस्तुत की गयी। गंभीर विषय के रूप में इसने दर्शन, ज्यौतिष, इतिहास आदि से सम्बन्धित ग्रन्थ भी प्रकाशित किए। मिथिला में प्रचलित कुरीतियों एवं सामाजिक दोषों को इंगित कर उसके परिहार का उपाय प्रचारित करने में भी इस पत्रिका की अहम् भूमिका रही। पत्रकारिता के माध्यम से पुस्तक प्रकाशन की प्रवृत्ति का सूत्रपात भी हमें इस पत्रिका में छपे 'मैथिल चारुचर्या' नामक पुस्तक से दीख पड़ती है। इस पत्रिका की उपलब्धियों में मैथिली में पत्रिका-प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त करना, शिक्षित समुदाय में अपनी मातृभाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना, मातृभाषा माध्यम से लोकजगत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना तथा मिथिलाञ्चल के विकास हेतु शंखनाद करना आदि कही जा सकती है। यह पत्रिका केवल तीन चार वर्षों तक ही अपना अस्तित्व बनाये रख सकी और तत:पर कालकवलित हो गयी।

## मिथिलामोद

मैथिली की यह दूसरी मासिक पत्रिका थी जिसका प्रकाशन 1905 ई० के ही श्रावणी पूर्णिमा से आरंभ हुआ था। यह पत्रिका भी प्रवास से ही प्रकाशित हुई थी और इसका प्रकाशन स्थल था काशी। काशी मैथिल विद्वज्जन समिति के प्रबन्ध में इसका सम्पादन म०म० मुरलीधर झा द्वारा किया जाता रहा। परवर्त्तीकाल में इसे ज्यौतिषाचार्य पं० सीताराम झा एवं पं० उपेन्द्रनाथझा का भी सम्पादकत्व प्राप्त हुआ। प्रकाशन के पहले पाँच वर्षों तक इसका स्वरूप मैथिली-हिन्दी का था किन्तु वाद में इसने हिन्दी को सर्वथा ही वहिष्कृत कर दिया था। बीच-बीच में बन्द होकर भी यह पत्रिका लगभग सोलह वर्षों तक प्रकाशित होती रही। तत:पर कुछ समय तक स्थगित रहने के बाद 1936 से इसका पुन: प्रकाशन 1941 ई० तक होता रहा। इस पत्रिका को वृहत्तर मिथिला के सुदूरवर्त्ती लेखकों का सहयोग प्राप्त था। इसने एक समर्थ लेखक मण्डल का संगठन किया जिन लोगों ने विभिन्न विषयों पर मैथिली में रचना द्वारा इस भाषा-साहित्य को समृद्ध किया। मैथिली साहित्य के अनेक विशिष्ट साहित्यकारों में पं० जीवन झा, बबुआजी मिश्र, परमेश्वर झा, जनार्दन झा 'जनसीदन', दीनबन्धु झा, नन्दकिशोर दास, डा० अमरनाथ झा, ज्यौ० बलदेव मिश्र, छेदी झा, कुशेश्वर कुमर, सीताराम झा, पुलकित लाल दास 'मधुर'; वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'; उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'; काञ्ची नाथ झा 'किरण' आदि का तो सहज सहयोग इसे प्राप्त ही रहा था, यहाँ तक कि इसने हैमवती देवी, चन्द्रमुखी देवी, श्यामादेवी जैसी महिला साहित्यकारों को भी मैथिली में प्रवृत्त कराया। इस पत्रिका को मैथिली की लगभग तीन दर्जन पुस्तकों के प्रकाशन का भी श्रेय है। इस पत्रिका ने मैथिली वर्त्तनी के निर्धारण और मिथिलाक्षर की पुन:प्रतिष्ठा के लिये भी वातावरण का निर्माण किया। मैथिली में शब्दकोष के निर्माण की दिशा में भी इसके द्वारा प्रयास किया गया था। हिन्दी द्वारा मैथिली को अपनी उपभाषा के रूप में समाहित करने के प्रयासों का इस पत्र में पुरजोर विरोध मिलता है। इस पत्र ने मिथिला में व्याप्त रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों को नष्ट करने का प्रयास तो किया ही, साथ ही साथ धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, कृषि-वाणिज्य एवं उद्योग आदि की समस्याओं की ओर भी लोगों का ध्यानाकर्षण कराने की चेष्टा की। इसने मातृभाषा के प्रति प्रतिबद्धता, मातृभाषा माध्यम से शिक्षा एवं विश्वविद्यालयों में मैथिली की मान्यता हेतु आवाज भी उठायी। मिथिला की गौरवमयी परम्परा का गुणानुवाद एवं संरक्षण, प्राचीन साहित्य का संकलन, नवीन साहित्य की रचना हेतु संघटन, शासक में कर्त्तव्यबोध की चेतना का जागरण, पाश्चात्य सभ्यता के प्रति सतर्क रहने की भावना का प्रचार आदि वहुआयामी विषयों पर दृष्टिसम्पन्न इस पत्रिका को आज भी गंभीर वैचारिकता; निर्भीक अभिव्यक्ति सामर्थ्य एवं स्पष्टवादिता के लिये याद किया जाता है।

## मिथिला मिहिर

यह मैथिली की सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका साबित हुई। इसका प्रकाशन स्थल दरभंगा था और इसलिये मिथिला से प्रकाशित प्रथम मैथिली पत्र होने का गौरव इसे ही प्राप्त हुआ। इसका प्रकाशन 1909 ई० के मकर संक्रान्ति से आरंभ हुआ था। यह मासिक पत्रिका थी और इसके प्रथम सम्पादक थे पं० विष्णुकान्त झा 'शास्त्री'। इसका मुख्य स्वर हिन्दी का था और अंग रूप में इसमें मैथिली को भी स्थान प्राप्त था। परवर्ती काल में इसके विभिन्न सम्पादकगण हुए यथा- म.म. परमेश्वर झा, जगदीश प्रसाद ओझा, योगानन्द कुमर, जनार्दन झा 'जनसीदन', कामेश्वर झा शास्त्री, सुरेन्द्र झा 'सुमन'; सुधांशु शेखर चौधरी आदि। तीन वर्षों तक मासिक के रूप में चलने के बाद यह पत्रिका साप्ताहिक कर दी गई। धीरे धीरे इसमें हिन्दी का स्थान गौण होता गया और मैथिली को प्रधानता दी जाने लगी। सुमनजी के सम्पादनकाल में इसके द्वारा 1936 ई० में 'मिथिलांक' नामक विशेषांक का प्रकाशन किया गया जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। 1954 के बाद कुछ दिनों तक स्थगित रहने के बाद 1960 से इसका प्रकाशन पटना से होने लगा और यह समाचार-विचारों के साथ ही मैथिली साहित्य के बहुविध

विकास के सशक्त माध्यम के रूप में अपना स्थान बना सकी। आधुनिक मैथिली साहित्य की विभिन्न विधाओं के विकास में इसका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। परवर्त्तीकाल में इसने दैनिक का स्वरूप भी ग्रहण किया जिसकी चर्चा पूर्व ही की जा चुकी है। अन्तत: यह पत्रिका भी जो मिथिला के मिहिर के रूप में जानी जाती थी 1989 से सदा के लिये तिरोहित हो गयी।

**मैथिली प्रभा और मैथिल प्रभाकर**

इन दोनों मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन जैत (मथुरा) निवासी पं० रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' ने कराया था। 1920 ई० से 1926 के बीच मैथिली प्रभा अजमेर और आगरे से प्रकाशित हुई थी तथा मैथिल प्रभाकर 1929-30 के बीच अलीगढ़ से प्रकाशित हुई थी। प्रवास से सञ्चालित इन पत्रिकाओं का उद्देश्य था प्रवासी मैथिलों के साथ मिथिला के मैथिलों का साहित्यिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाना, जिसमें ये पत्रिकायें सफल हुईं। इनमें मैथिली-हिन्दी के लेख प्रकाशित होते थे तथा इस प्रकार इनके द्वारा भी मैथिली की यत्किञ्चित साहित्यिक सेवा होती रही। इसके उल्लेखनीय लेखकों में पुलकित लाल दास 'मधुर'; छेदी झा 'मधुप'; यदुनाथ झा यदुवर', कुमार गंगानन्द सिंह; भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

**श्रीमैथिली**

इस पत्रिका का प्रकाशन दरभंगा से हुआ था और इसका स्वरूप मासिक का था। इस पत्र को प्रथम विशुद्ध मैथिली पत्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसमें अन्य भाषाओं को गौण रूप में भी नहीं स्वीकार किया गया था। इसके सम्पादक थे उदितनारायण दास और नन्द किशोर लाल। यह पत्रिका 1925 ई. से 1927 के बीच केवल दो वर्षों तक ही प्रकाशित हो सकी किन्तु इस अल्प अवधि मे ही इस पत्रिका ने मैथिली गद्य के निर्माण में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। साहित्यिक समालोचनाओं एवं समसामयिक निबन्धों के द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं की ओर लोकजगत का ध्यान आकृष्ट करने में यह पत्रिका सफल हुई थी। फिर भी इस पत्र की भाषा में प्रौढता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। इस पत्रिका की महत्ता इसलिये भी ज्ञापित होती है कि पहली बार इसीने मिथिला के वृहत्तर समुदाय को मैथिल और उनकी भाषा को मैथिली मानते हुए उनकी समस्याओं को भी मिथिला की समस्या मानने हेतु पुरजोर अभियान चलाया था।

**मिथिला**

यह पत्रिका 1929 से लहेरियासराय से प्रकाशित हुई थी। इसके सम्पादक थे पं० कुशेश्वर कुमर तथा बाबू भोलालाल दास। इन दोनों में पं० कुशेश्वर कुमर जहाँ प्राचीन धारा के पोषक थे वहीं भोलालाल दास पाश्चात्य शिक्षा सम्पन्न आधुनिक विचार से युक्त। स्वभावत: इस पत्र के प्रकाशन के साथ ही मैथिली पत्रकारिता में गतिशीलता की झलक मिलने लगती है। पहले इसमें साहित्यिक लेखों की ही प्रधानता रहती थी किन्तु बाद में सामाजिक लेखों को भी प्रश्रय दिया गया। मैथिली साहित्य के विकास मार्ग को प्रशस्त करने में इस पत्र की अहम् भूमिका रही। मैथिलो को उचित अधिकार प्राप्त कराने के उद्देश्य को इस पत्रिका ने अपना मूल लक्ष्य रखा। यह पत्रिका लेखन शैली के प्रति उदार भावना रखती थी। मैथिली को हिन्दी की बोली कहकर इसे आत्मसात् करने के षड्यंत्र का यह अवरोधक बनी रही तथा विश्वविद्यालयों में स्वतन्त्र भाषा के रूप में मैथिली को प्रतिष्ठापित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसने नवयुवकों में मैथिली के प्रति उत्साह का सृजन किया और मैथिली लेखकों के एक विशिष्ट वर्ग को प्रोत्साहित किया जो परवर्तीकालमें मैथिली के दुर्धर्ष विद्वान एवं साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

**मिथिलामित्र**

यह मैथिली की प्रथम पाक्षिक पत्रिका थी जो 1931-32 की अवधि में बनैली के कुमार कृष्णानन्द सिंह के संरक्षकत्व में सुल्तानगंज से प्रकाशित हुई थी। इसके सम्पादकमण्डल मे पं० गौरीनाथ झा, धनुषधारी दास एवं महेश झा थे। इस पत्र के द्वारा जो उल्लेखनीय कार्य किये गये उनमें मौलिक लेखन को प्रोत्साहन के साथ ही मिथिला के लोगों में इस अनुभूति की स्थापना भी थी कि हम जनकजा जानकी के सन्तान हैं। क्रमश: इस पत्र के द्वारा जानकी नवमी को सम्पूर्ण मिथिला में पर्व के रूप में मनाने हेतु विविध रूपेण प्रचार किया गया। इसने 'जानकी नवमी' पर विशेषांक भी निकाला था, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। पं० महावीर झा 'वीर'; पं० जीवनाथ झा, श्यामानन्द झा आदि इसके विशिष्ट लेखकों में थे।

**मैथिलबन्धु**

1935 ई० में 'मैथिल बन्धु' नाम से एक मासिक पत्र का प्रकाशन अजमेर नगर से प्रारंभ हुआ। इसके सम्पादक थे रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित' और लक्ष्मीपति सिंह। यह मूलत: हिन्दी की पत्रिका थी किन्तु कभी-कभी इसमें मैथिली को भी प्रश्रय दिया जाता था। अतएव प्रवासी मैथिल द्वारा स्वभाषा के प्रति लगाव एवं संरक्षण की दिशा में प्रयास के रूप में यह पत्र महत्वपूर्ण कही जाती रही है। यह पत्र बीच-बीच में स्थगित रहते हुए भी 1978 ई० तक प्रकाशित होती रही। इसके द्वारा प्रायोजित महासभांक, श्रीगंगानाथ स्मृति अंक, पूजांक, होलिकांक, फगुआ अंक, विद्यापति अंक, मधुसूदनांक

आदि उल्लेखनीय हैं। इस पत्र के माध्यम से **हिन्दी-मैथिली शिक्षक** नाम के पुस्तक के प्रकाशन की भी सूचना मिलती है जो सम्पादकीय दूरदृष्टि का परिचायक है। वस्तुतः इस पत्र का उद्देश्य यह था कि प्रवासी मैथिल परिवार अपनी मातृभाषा को प्रवासस्थ रहने की विवशता के कारण भूल न जाँय और अपने इसी पावन उद्देश्य के कारण इसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

**मैथिल युवक और जीवन प्रभा**

'मैथिल बन्धु' की सरणी पर ही 'मैथिल युवक' नामक पत्रिका का प्रकाशन अजमेर से ही चुन्नीलाल झा के सम्पादकत्व में 1938-41 के बीच हुआ तथा एक दूसरी पत्रिका 'जीवन प्रभा' का प्रकाशन 1940-50 के बीच ब्रजमोहन झा के सम्पादकत्व में क्रमशः आगरा एवं झाँसी से होता रहा। ये दोनों पत्रिकाएँ वस्तुतः प्रवासी मैथिलों की जातीय पत्रिकाएँ थी जो उनके बीच सम्पर्क-सूत्र का काम करती थीं। किन्तु इन पत्रिकाओं में मैथिल समाज के विविध समस्याओं पर भी निबन्धादिक प्रकाशित किए गये। 'मैथिल बन्धु' की भाँति ही इन पत्रिकाओं ने भी प्रवासी मैथिलों को अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध बने रहने का संदेश दिया।

**भारती**

1937 ई० के वसन्तपंचमी से दरभंगा से भारती नामक मासिक मैथिली पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ था। इसके सम्पादक थे बाबू भोलालाल दास। यह पत्र मैथिली साहित्य परिषद् की संरक्षकता में प्रकाशित हुई थी। साहित्यिक निबन्ध, यात्रा, समालोचना एवं प्राचीन स्थायी मूल्य के वस्तुओं के प्रकाशन की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी। मैथिली को स्वतंत्र भाषा के रूप में विश्वविद्यालयों में स्थान दिलाने के आन्दोलन को अग्रसारित करने में इसकी प्रमुख भूमिका रही। मैथिली आन्दोलन को बल प्रदान करने के लिये इस पत्र के द्वारा जानकी नवमी, विद्यापति जयन्ती आदि पर्वों के मनाने पर जोर दिया गया। वर्तनी के प्रति यह पत्र उदारवादी भावना रखती थी और समस्त मिथिलावासी को मैथिली भाषा के प्रति आकृष्ट कराने में इसकी भूमिका सराहणीय रही। मिथिला की राजनीतिक एवं सामाजिक दशा-दिशा के प्रति यह अत्यन्त सकांक्ष रही।

**विभूति**

यह मासिक पत्रिका मुजफ्फरपुर से प्रकाशित होती थी। इसके सम्पादक थे बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' जो अपना छद्मनाम भवनाथ शर्मा साहित्यालंकार रखे हुए थे। इसका भी प्रकाशन 1937 से ही शुरू हुआ था। मैथिली की यह पत्रिका अपने पीत पत्रकारिता के लिये प्रसिद्ध हुई। अन्यान्य पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं रचनाओं की भर्त्सना



तथा दरभंगा राज के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति में दत्तचित्त रहते हुए भी इस पत्रिका ने साहित्यिक समीक्षा, मैथिल महासभा के संकीर्ण नीतियों का विरोध, सत्साहित्य के प्रकाशन आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

**मैथिली साहित्य पत्र**

यह त्रैमासिक पत्रिका 1936 से 39 के बीच आचार्य रमानाथ झा के सम्पादकत्व में प्रकाशित होती रही। इसका प्रकाशन स्थल दरभंगा ही था। यह एक सुनियोजित पत्रिका थी जिसका उद्देश्य था पत्रिका के माध्यम से पुस्तकों का प्रकाशन। इसके माध्यम से उद्गम कथा, वेकफिल्डक पादरी, चीनीक लड्डू, शकुंतला, शृंगार भजन गीतावली, एकावली परिणय, कीचक वध आदि ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया।

**सत्य सन्देश**

यह मासिक पत्रिका 1943 ई० में काञ्चीनाथ झा 'किरण' के सम्पादकत्व में काशी से प्रकाशित हुई थी। भारती, साहित्य पत्र, मोद, विभूति आदि के अवसान के बाद पत्रकारिता की निरन्तरता को वर्त्तमान रखने के लिये यह किरणजी का साहसिक प्रयास था। इसका उद्देश्य भी साहित्य निर्माण को ही आगे बढ़ाना था। इसका केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका।

**स्वदेश**

1939 के बाद लगभग दस वर्षों तक मैथिली में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अवरुद्ध सा रहा। जनवरी 1948 से दरभंगा से ही पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' ने एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया जो केवल छः अंक प्रकाशित होने के बाद स्थगित हो गयी। इस पत्रिका का स्तर अत्यन्त उत्तम कोटि का था। इसके सम्पादकीय अत्यन्त सारगर्भित होते थे। विभिन्न विषयों पर रचना के लिये इसमें स्तम्भ निर्धारित थे। सामग्री संचयन, सम्पादन एवं मुद्रण की दृष्टि से यह मानक पत्रिका थी।

**मिथिला ज्योति**

'स्वदेश' की सरणी पर ही 1948 में पटना से एक मैथिली मासिक का प्रकाशन हुआ था जो केवल सात अंक प्रस्तुत कर विलुप्त हो गयी। इसके सम्पादक थे बाबू दुर्गापति सिंह। इसमे कविता, एकांकी आदि विधाओं के साथ ही सामाजिक विकृति, संस्कृति, राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति आदि से सम्बद्ध रचनाएँ छपती थीं। मैथिली के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के साथ ही नूतन प्रतिभाओं की श्रेष्ठ रचनाओं को इसमें प्रश्रय

मिला। सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्य चित्र के प्रकाशन की दृष्टि से यह पत्रिका आकर्षक थी।

**पल्लव**

1948 में ही श्री वीरेन्द्र कुमार चौधरी के सम्पादकत्व में नेहरा (दरभंगा) से पल्लव नाम की मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। मिथिला के ग्राम्य क्षेत्र से प्रकाशित होनेवाली यह पहली पत्रिका थी। इसने नये लेखकों को प्रोत्साहित करने की घोषणा की थी। पश्चात् यह अनियतकालीन पत्रिका के रूप में डा० शैलेन्द्र मोहन झा के सम्पादकत्व में 1958 तक छपती रही। आधुनिक मैथिली कथा धारा के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

**वैदेही**

'मिथिला मिहिर' की भाँति ही वैदेही भी मैथिली की एक दीर्घजीवी पत्रिका सावित हुई। प्रारंभ में इसका प्रकाशन सीतामढ़ी से हुआ किन्तु बाद में इसका प्रकाशन स्थल दरभंगा हो गया। पाक्षिक के रूप में इसके छः अंकों मात्र का प्रकाशन प्रो० कृष्णकान्त मिश्र के सम्पादकत्व में हुआ था। 1953 के बाद यह मासिक रूप में प्रकाशित होने लगी। इसके सम्पादकों में प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', सुधांशु शेखर चौधरी, प्रो० कृष्णकान्त मिश्र, पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'; प्रो० सोमदेव, रमानन्द रेणु, हंसराज आदि का नाम देखा जाता है। अमरजी के सम्पादन काल तक इसका स्तर उत्तम कोटि का रहा किन्तु क्रमशः यह स्तरविहीन होती चली गयी। फिर भी मैथिली भाषा-साहित्य के बहुविध विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इसके द्वारा अनेक विशेषांकों का प्रकाशन हुआ जो सर्वथा महत्त्वपूर्ण हैं। मैथिली की अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन पुस्तकों को प्रकाश में लाने का श्रेय भी इस पत्रिका को है। यह पत्रिका लगभग 1990 ई० तक चलती रही और मैथिली के युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करती रही।

**मिथिला दर्शन-मैथिली दर्शन**

1953 ई० के जनवरी महीने से मिथिला दर्शन नाम के एक मासिक पत्र का प्रकाशन कलकत्ते से आरंभ हुआ। इसके सम्पादक थे स्वनामधन्य बाबू प्रबोध नारायण सिंह। यह पत्रिका कलकत्ता के मैथिली भाषी लोगों की प्रमुख पत्रिका थी। इसके माध्यम से मैथिली को राजनीतिक अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया गया। इसका उद्बोधन वाक्य था-



अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने।

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने।।

इस पत्रिका में निबन्ध, कविता, कथा, एकांकी आदि विधाओं की रचना के साथ ही मैथिली से सम्बन्धित समाचारों को भी प्रधानता दी जाती थी। सुनियोजित रंगमंच की स्थापना द्वारा मैथिली नाट्यसाहित्य को विकसित करने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। साहित्य अकादमी में मैथिलो को स्थान दिलाने हेतु इस पत्र ने स्वर मुखर किया था। जनगणना में अपनी मातृभाषा के रूप में मैथिली लिखाने के लिये इसका आह्वान भी महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। मैथिली को संविधान की अष्टम् अनुसची में स्थान दिलाने के लिये भी यह पत्रिका आवाज उठाती रही।

1971 मे इसके सम्पादक मण्डल में बाबूसाहेब चौधरी का पदार्पण हुआ। 1973 में प्रबोध बाबू से मतान्तर के कारण इन्होंने मिथिला दर्शन के स्थान पर 'मैथिली दर्शन' नाम से इस पत्रिका को चलाना आरंभ किया। बाद मे यह स्थगित कर दी गयी। मैथिली को संविधान की अष्टम् अनुसूची में स्वीकृति के बाद पुनः श्रीरामलोचन ठाकुर के सम्पादकत्व में इसके दो तीन अंक इधर प्रकाशित हुए हैं। साहित्य सेवा के साथ ही मिथिला-मैथिली के राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के प्रति सजग दृष्टि 'दर्शन' की विशिष्टता रही। मैथिली में नाटक एवं आधुनिक कथा के विकास की दृष्टि से यह पत्रिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है।

**चौपाड़ि**

1955 ई० से ही पटना से एक साहित्यिक बुलेटिन का प्रकाशन लक्ष्मीपति सिंह के सम्पादकत्व मे प्रारंभ हुआ था जो कुछ दिनों तक मासिक रहने के बाद अनियतकालीन बन गई और 1957 के आसपास कालकवलित हो गई। इसका प्रकाशन वस्तुतः सम्पादक के मातृभाषा प्रेम का प्रतीक कहा जा सकता है। साथ ही इसे उनकी आत्मतुष्टि का साधन भी माना जा सकता है। फिर भी इस पत्र ने मैथिली साहित्य को कुछ उपादेय सामग्रियाँ उपलब्ध करायी तथा आधुनिक मैथिली कविता की विशृंखलताओं एवं कथा में अश्लीलता का विरोध किया।

**मिथिला दूत**

यह प्रवासी मैथिलों की पत्रिका थी जो 1955 ई० में ही सम्पत्ति मिश्र द्वारा कानपुर से संचालित हुई थी। इसकी योजना थी- विश्व साहित्य के सर्वोत्तम ग्रन्थों को मैथिली में अनूदित कर प्रकाशित करना तथा प्राचीन मैथिली साहित्य का संकलन। किन्तु यह पत्रिका अपनी योजना में सफल न हो सकी तथा कथा-कविता, एकांकी-नाटक

एवं कुछ निबन्धों का ही प्रकाशन कर कालकवलित हो गयी। इस पत्रिका का मैथिली पत्रकारिता के इतिहास में यही महत्त्व है कि इसने प्रवासी मैथिलों में अपनी भाषा के प्रति ममत्व भाव को जगाये रखने एवं पत्रकारिता की निरन्तरता को बनाये रखने मे यत्किञ्चित सहयोग प्रदान किया।

**नूतन विश्व**

यह पत्रिका 1957 ई० से लहेरियासराय से प्रकाशित हुई और लगभग तीन वर्षों तक जीवन्त रही। मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका योगदान इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसने एक खास साम्प्रदायिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिये मैथिली भाषा को माध्यम बनाया और इस प्रकार मैथिली पत्रकारिता यहाँ से ही साहित्यकारिता मात्र तक सीमित न रहकर विशिष्ट दर्शन एवं विचारधारा के प्रसार का संसाधन बनी दीख पड़ती है। यह पत्रिका 'आनन्द मार्ग' की पत्रिका थी और उसके दर्शन का प्रचार मैथिली माध्यम से करना इसका उद्देश्य था। इसके सम्पादक थे गिरधरनारायण।

**निर्माण**

निर्माण वस्तुत: एक हिन्दी पत्रिका थी जो लहेरियासराय से पं० यदुनन्दन शर्मा 'प्रलयंकर' के सम्पादकत्व में 1948 से प्रकाशित हुई थी। इसका स्वरूप साप्ताहिक का था। 15 अगस्त 1954 में पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' को इसके सम्पादन का कार्यभार दिया गया। इन्होंने अपने सम्पादनकाल में इसमें मैथिली रचनाओं को पर्याप्त प्रश्रय दिया। इसके द्वारा प्रकाशित 'मधुप विशेषांक' एवं कुछ मैथिली अभिभाषण अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं जो सम्पादक के मैथिली के प्रति प्रतिबद्धता के प्रतीक कहे जा सकते हैं। 1956 में यह पत्रिका भी स्थगित कर दी गई।

**बटुक, धीयापुता और शिशु**

मैथिली पत्रकारिता में बहुविध प्रयोग की दृष्टि से बटुक, धीयापुता और शिशु की महत्ता रही है। ये तीनों बालपत्रिकाएँ थीं। बटुक का प्रकाशन प्रयाग से 1948 ई० में विजयकान्त मिश्र के सम्पादकत्व में आरंभ हुआ था। इसका प्रकाशन मासिक के रूप में 1954 तक चलता रहा। कुछ दिनों तक स्थगित रहने के बाद फिर इसका प्रकाशन 1959 से सुधाकान्त मिश्र के सम्पादकत्व में होने लगा। यह पत्रिका दीर्घजीवी साबित हुई तथा विगत शताब्दी के आठवें दशक तक इसका प्रकाशन होता रहा। यद्यपि यह क्षीणकाय पत्रिका थी और इसका उद्देश्य मातृभाषा के प्रति मैथिल बच्चों का ध्यान आकृष्ट करना था, किन्तु अपने इस उद्देश्य में यह पूर्णत: सफल न हो सकी क्योंकि मातृभाषा माध्यम से मैथिल बच्चों की शिक्षा सरकारी स्वीकृति के बाद भी यथार्थ स्वरूप ग्रहण न कर सकी।



फिर भी बटुक अपने प्रयोग में सफल था और इसके माध्यम से प्रकाशित विशेषांक मैथिली बाल साहित्य के विकास की दृष्टि से अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण साबित हुए। इसके द्वारा डॉ० उमेश मिश्र रचित नलोपाख्यान, रमानाथ झा लिखित संयुक्ताक्षर रहित शिशु पाठमाला, कथा विशेषांक, इजोती रानी, महामहोपाध्याय स्मृति विशेषांक, मंगल ग्रहक राजकन्या विशेषांक, विभिन्न व्याख्यान आदि प्रकाश में आये जो सर्वथा संग्रहणीय हैं। इसके अतिरिक्त इसने मैथिली में जीवनी साहित्य के प्रकाशन एवं अनेक कथाओं को भाषांतर से मैथिली में लाने का भी प्रयास किया था। इसके माध्यम से अनेक किशोरों ने मैथिली में लेखन का आरंभ किया था।

1957 ई० से धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' के सम्पादकत्व में लोहना से 'धियापुता' बालमासिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। यह पत्रिका बालमनोविज्ञान को ध्यान में रखने की दृष्टि से 'बटुक' की अपेक्षा अधिक सफल थी। फिर भी 1960 ई० तक इसके केवल 10-12 अंक ही प्रकाशित हो सके। बाल साहित्य के निर्माण की दृष्टि से इस पत्रिका का भी विशिष्ट महत्त्व है।

इसी क्रम मे दरभंगा से भी एक बालपत्रिका का प्रकाशन स्मरणीय है जिसका नाम था शिशु। किन्तु इसका केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका।

**इजोत**

1960 ई० में दरभंगा से सहकारिता के आधार पर प्रकाशित इस मैथिली मासिक पत्रिका के तीन अंक मात्र प्रकाशित हो सके। सामूहिक प्रयत्न के आधार पर पत्रकारिता की दृष्टि से इसे अभिनव प्रयोग कहा जा सकता है। इसके द्वारा मैथिली छात्रों को ध्यान में रखते हुए समीक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। अन्य साहित्यिक विधाओं को भी इसमें स्थान दिया जाता रहा। इसके सम्पादक मण्डल में सुरेन्द्र झा 'सुमन', सुधांशु शेखर चौधरी और पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' थे। मैथिली में निबन्ध साहित्य के विकास में इसके योगदान को महत्त्वपूर्ण समझा जाता है।

**अभिव्यञ्जना**

यह एक द्वैमासिक पत्रिका थी जो 1960 से ही प्रो० मायानन्द मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने लगी थी। एक अंक पटना से निकलने के बाद इसका प्रकाशन स्थल सहरसा हो गया और वहाँ से भी इसके तीन-चार अंक मात्र ही प्रकाशित हो सके। एक साहित्यिक संकलन के रूप में इस पत्रिका ने मैथिली कथा एवं कविता में नव्यता को प्रोत्साहित किया। मैथिली साहित्य में नवीन दृष्टि, नये वस्तुविन्यास, नये उपमान-उपमेय, नवीन स्वर, प्रतीक, जीवन मूल्य तथा अभिव्यक्ति प्रणाली को

विकसित करने की प्रतिबद्धता से ओतप्रोत इस पत्रिका के द्वारा मैथिली गद्य, काव्य, निबन्ध-आलोचना आदि के विकास को गति मिली। प्रयोगवादी काव्य आन्दोलन को इस पत्रिका के माध्यम से संबल की प्राप्ति हुई। यह पत्रिका प्रो० रमानाथ झा एवं डा० जयकान्त मिश्र के बीच मैथिली कीर्त्तनिआ नाटक पर विवाद के लिये भी प्रसिद्ध हुई।

**मिथिला**

दरभंगा से लक्ष्मण झा के सम्पादकत्व में प्रकाशित यह साप्ताहिक मैथिली पत्रिका थी जिसका प्रकाशन 1952 से आरम्भ हुआ था। यह भी अल्पजीवी पत्रिका ही साबित हुई। यद्यपि इससे पहले से ही साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर' का प्रकाशन होता आ रहा था लेकिन मिहिर में उस समय तक हिन्दी की ही प्रधानता रहती थी। इस दृष्टि से मिथिला को सम्पूर्णतया मैथिली का प्रथम साप्ताहिक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि इसमें कथा, कविता को भी प्रश्रय था किन्तु यह मुख्यत: समाचार-विचार की पत्रिका थी। इस पत्रिका ने काँगेस की दुनीर्तियों पर प्रहार किया था तथा सरकारी स्तर पर भ्रष्टाचार की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट कराने में सफल हुई थी।

1957 में भोलानाथ मिश्र के सम्पादकत्व मे इसके कुछ अंक प्रकाशित हुए जिनमें साहित्य को भी प्रभूत स्थान दिया जाने लगा। 1968 में पुन: यह पत्रिका साहित्यिक मासिक के रूप मे केवल एक अंक लेकर अवतरित हुई थी जिसे मैथिली के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त था।

**मिथिला सेवक**

यह भी साप्ताहिक मैथिली पत्रिका थी जिसका प्रकाशन 1954-57 के बीच कलकत्ते से हुआ था। इसके सम्पादक थे श्री सभाकान्त झा। कलकत्ता के प्रवासी बन्धुओं द्वारा आयोजित इस पत्रिका का प्रधान उद्देश्य था मैथिली आन्दोलन को आगे बढ़ाना। इस पत्र के द्वारा पृथक् मिथिला प्रान्त के मांग को स्वर दिया गया था। इस पत्र मे देश-विदेश के समाचारों के सारांश को प्रमुखता दी जाती थी। कभी कभी इसमें हिन्दी लेखों को भी प्रश्रय दिया जाता रहा। कविता, कथा, गल्प, एकांकी आदि के प्रकाशन द्वारा इसने साहित्य की भी प्रभूत सेवा की।

**मैथिली-साहित्य परिषद् पत्रिका**

1962 ई० में दरभंगा से ही रमानाथ झा, सुमनजी, किरणजी एवं श्रीकृष्ण मिश्र के सम्पादकत्व में मैथिली साहित्य परिषद् त्रैमासिक पत्रिका के एक अंक का प्रकाशन हुआ था जो शोध साहित्य के प्रकाशन की दृष्टि से पत्रकारिता का मानदण्ड बनी। किन्तु इसका केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका। परिषद् ने पुन: 1986 से इस पत्रिका को



डा० नवीन चन्द्र मिश्र के सम्पादन में आरंभ किया था। अनेक सम्पादकों के माध्यम से इसके कुछ अंक मात्र प्रकाशित हो सके। इसका प्रारंभिक स्वरूप गवेषणात्मक था किन्तु परवर्ती स्वरूप सामान्य साहित्यिक पत्रिकावाला ही रह गया था। 1995 में इसके कुछ अंक 'सीता' नाम से प्रो० ऋतुनाथ झा के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुए थे।

**अभियान**

यह त्रैमासिक मैथिली पत्रिका थी जिसका प्रकाशन 1963 में पटना से हुआ था। इसके केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके। इसके सम्पादक थे प्रो० श्री आनन्द मिश्र। मैथिली गद्य के विकास को दृष्टिपथ पर रखकर इसका प्रकाशन आरम्भ हुआ था। पुष्ट कलेवर, रूप सज्जा एवं स्तरीय गद्यों से सम्पुष्ट यह पत्रिका शैली के प्रति उदार थी और मैथिली गद्य के विकास में इसका योगदान महत्त्वपूर्ण है।

**मैथिली कविता**

साहित्य की एक विधा मात्र पर आधारित मैथिली की यह पत्रिका 1968 के अप्रैल महीने से त्रैमासिक के रूप मे श्रीनचिकेता के सम्पादकत्व में कलकत्ते से प्रकाशित हुई थी और केवल छ: अंकों के द्वारा ही इसने मैथिली में पत्रकारिता को दिशाबोध प्रदान किया था। इसने विधा के आधार पर पत्रकारिता को वर्गीकृत करने में सफलता पायी थी। इसका मूल उद्देश्य था मैथिली मे नवकवितावाद के नाम पर कविता में फैलते हुए उच्छृंखलतावाद पर आघात करना। इसके माध्यम से विभिन्न विदेशी भाषाओं के कविताओं के मैथिली में अनुवाद भी प्रकाशित किये गये। इसे कविकर्म की मर्यादा को प्रतिष्ठित करने में योगदान के लिये खासकर याद किया जाता है।

**मैथिली प्रकाश**

यह शोध एवं अनुसन्धान पर आधारित मैथिली पत्रिका थी जिसका आयोजन कलकत्ते से हुआ था। यह 1968 में अर्द्धवार्षिक के रूप में पदार्पित होकर परवर्त्ती काल मे चातुर्मासिक स्वरूप में अवतरित होने लगी। 1974 के बाद इसने भी सामान्य पत्रिकाओं की तरह साहित्य के रचनात्मक विधाओं को भी स्थान देना शुरू कर दिया था, किन्तु इसका वार्षिकांक शोध-अनुसन्धान विषय पर ही अवलम्बित रहता था। मैथिली की अस्तित्व रक्षा, न्याय्य अधिकार की प्राप्ति आदि के लिये भी इसने समय-समय पर विचार चर्चाओं का प्रकाशन किया था।

**आखर**

1967 ई० में कलकत्ता से प्रकाशित इस मासिक मैथिली पत्रिका के सम्पादक थे श्रीकीर्त्तिनारायण मिश्र और श्री वीरेन्द्र मल्लिक। सामग्री संचयन एवं मुद्रण की दृष्टि

से यह पत्रिका महत्वपूर्ण सावित हुई थी। इस पत्रिका के द्वारा मैथिली नवलेखन को प्रोत्साहन मिला तथा मैथिली भाषा आन्दोलन को भी इसने तीव्र बनाया। इसके लगभग बारह अंक मात्र प्रकाशित हो सके।

**सोनामाटि**

यह पटना से प्रकाशित मासिक पत्रिका थी जिसका आरंभ 1969 ई० में हुआ था। इसे हिन्दी में प्रकाशित 'कादम्बरी' के सदृश बनाने का प्रयास किया गया। इसके सम्पादक थे भारती भक्त। यह एक स्तरीय पत्रिका थी और इसके द्वारा मैथिली की कथाविधा सशक्त हुई। समीक्षात्मक-विचारात्मक निबन्ध, प्रेत कथा, शिकार कथा, देश-दर्शन आदि के द्वारा सभी प्रकार के पाठकों को लुभाने का प्रयास इस पत्रिका की उपलब्धि कही जा सकती है। तीन वर्षों में इसके मात्र आठ अंक ही प्रकाशित हो सके।

**बागमती**

यह पत्रिका दरभंगा से ऋचालोक के तत्वाधान में श्रीशिवाकान्त पाठक के सम्पादन में प्रकाशित हुई थी। यह एक राष्ट्रवादी पत्रिका थी। इसमें कथा-कविता-निबन्ध आदि तो प्रकाशित होते ही थे राष्ट्रीय समस्याओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। परिवार नियोजन, त्रिभाषाफार्मूला, अर्थचिन्तन, शिक्षा पद्धति आदि व्यापक विषयों की ओर इसने मैथिली माध्यम से लोगों का ध्यान आकृष्ट कराया। मैथिली आन्दोलन के प्रति भी यह पत्रिका सतर्क रहा करती थी। इसकी आवृति मासिक थी और यह लगभग छः अंकों तक प्रकाशित होती रही।

**लोकमञ्च**

यह एक अर्द्धवार्षिक पत्रिका थी जिसका प्रकाशन कलकत्ते से हुआ था। 1969 ई० में केवल एक अंक के बाद ही यह कालकवलित हो गयी। वर्गीय पत्रकारिता की दृष्टि से यह पत्रिका मैथिली पत्रकारिता के इतिहास में इसीलिये स्मरणीय है कि इसने अभिनय एवं रंगमंच मात्र को केन्द्र में रखकर पत्रकारिता के एक विशेष क्षेत्र को चुना था। इसमें नाटिका एवं नाट्यविषयों पर आलेख मात्र प्रकाशित किये गये। इसके सम्पादक थे श्री गुणनाथ झा।

**जनक**

यह एक साप्ताहिक मैथिली पत्रिका थी जिसका प्रकाशन पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' के सम्पादकत्व में दभंगा से 1964 ई० से आरंभ हुआ था और यह 1965 के जुलाई महीने तक ही चल सकी। यह समाचार-विचार पर आधारित पत्रिका थी और मैथिल समाज में राजनीतिक चेतना जगाने के उद्देश्य से इसका प्रकाशन शुरू किया गया



था। मिथिला विश्वविद्यालय की स्थापना, मैथिली भाषा की रक्षा, दरभंगा में आकाशवाणी केन्द्र आदि प्रमुख विषयों पर इसने लोकमत को प्रभावित किया।

**मिथिला भूमि**

यह एक त्रैमासिक मैथिली पत्रिका थी जो प्रभाकर मिश्र के सम्पादन में जमशेदपुर से प्रकाशित होने लगी। यह 1969 से 1970 के बीच प्रकाशित होकर स्थगित हो गयी। परवर्त्ती काल मे 1973 से यह यदा-कदा श्रीसोमदेव के सम्पादकत्व में प्रकाशित होती रही। मैथिली पत्रकारिता को समृद्ध कर मैथिली के अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रवृत्ति से मंडित होते हुए भी इसने मैथिली में पीत पत्रकारिता को ही बढ़ाबा दिया था जिससे यह शीघ्र ही अलोकप्रिय हो गयी।

**स्वदेशवाणी**

यह पत्रिका देवघर से श्रीचन्द्रधर के सम्पादकत्व में 1969 ई० से प्रकाशित हुई। यह साप्ताहिक पत्रिका थी। इसका मुख्य उद्देश्य वृहत्तर मैथिली भाषी क्षेत्र को खण्डित कर अंगिका-वज्जिका आदि को भाषिक मान्यता देने का विरोध करना था और इन्हें मैथिली के बोली के रूप में प्रतिष्ठापित करना था। इसके लगभग ग्यारह अंक मात्र प्रकाशित हो सके। मैथिली में दैनिक के प्रकाशन की आवश्यकता पर इसने जोर दिया था तथा मैथिली को संविधान की अष्टम् अनुसूची में स्थान दिलाने हेतु भी इसने जोरदार प्रयत्न किया था। इसके द्वारा प्रकाशित 'भवप्रीतानन्द विशेषांक' इसकी विशिष्ट उपलब्धि मानी जाती रही है।

**मैथिली समाचार**

यह प्रयागस्थ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति का मुख पत्र रहा है। आकार-प्रकार की दृष्टि से इसे मैथिली बुलेटिन कहना अधिक श्रेयष्कर है। इसका प्रकाशन 1963 से अद्यावधि होता रहा है। मैथिली से सम्बन्धित कुछ सूचनाओं मात्र पर आधारित यह लघु पत्रिका केवल औपचारिकता ही पूरी करती रही है। पहले यह साप्ताहिक थी, फिर पाक्षिक हो गयी और अब यह छः महीने-वर्ष दिन पर अपना संयुक्तांक प्रकाशित करती रही है। इसके द्वारा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति की गतिविधियों एवं मैथिली से सम्बन्धित अनेक सूचनाओं का पता चलता रहता है। स्वनामधन्य डा० श्री जयकान्त मिश्र इसके प्रायोजक रहे हैं।

**मिथिला टाइम्स**

यह पत्रिका 1971 ई० से श्रीविजयकान्त ठाकुर से सम्पादकत्व में दरभंगा से प्रकाशित हुई थी। यह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को पत्रिका थी और स्वभावतः अपनी

विचार धारा के प्रचार के प्रतिप्रतिबद्ध थी। इसमें साहित्यिक भाषा के स्थान पर जनभाषा का प्रयोग होता था। यह साप्ताहिक पत्रिका थी। पार्टी विशेष द्वारा अपने राजनीतिक विचारधारा के प्रचार हेतु मैथिली को अपनाने की दृष्टि से इसे महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है।

**मिथिला भारती**

1969 ई० से मैथिली साहित्य संस्थान के तत्त्वाधान में एक विशुद्ध शोध त्रैमासिक का प्रकाशन लगभग दो वर्षों तक होता रहा। इसमें उच्च कोटि के शोध निबन्धों को प्रश्रय मिला तथा मिथिला के इतिहास, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, रहन-सहन आदि से सम्बन्धित आलोचना-अनुसंधानपरक आलेखों के प्रकाशन से इसने अपनी उपादेयता सत्यापित की। बाद में यह पत्रिका मैथिली अकादेमी द्वारा प्रकाशित की जाने लगी। किन्तु यह द्वैमासिक थी और केवल दो-तीन अंकों के बाद स्थगित कर दी गयी। प्रारम्भ में यह पूर्णतः शोध पत्रिका रही थी किन्तु बाद में रचनात्मक साहित्यों को भी प्रश्रय देने लगी थी।

**मैथिली समीक्षा**

मैथिली पुस्तकों की सामान्य स्थिति यही रहती है कि लेखक ही उसका प्रकाशक और वितरक भी रहता है। परिणामतः अच्छी पुस्तकें भी पाठकों के लिये अप्राप्य ही रहा करती हैं। दूसरी ओर लेखक भी पुस्तकों के भंडारण एवं प्रकाशन व्यय के कारण सीदित रहा करता है। इस स्थिति के प्रति सजग दृष्टि से सम्पन्न श्रीरमानन्द रेणु द्वारा मैथिली में एक पत्रिका प्रकाशित की गया. जिसका नाम था मैथिली समीक्षा। 1973 से आरम्भ इस पत्रिका के केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके जिनके माध्यम से कुछ मैथिली पुस्तकों का प्रचार किया गया और उनकी समीक्षा की गयी। यद्यपि यह एक सुनियोजित प्रयत्न था और वर्गीय पत्रिका का एक उदाहरण भी, किन्तु ग्राहकों के अभाव मे यह पत्र भी स्थगित कर देना पड़ा।

**संकल्प-अर्पण-चेतना स्मारिका**

विगत शताब्दी के नौवें दशक में विद्यापति पर्वों की धूम थी और इसी क्रम में कुछ संस्थाओं ने पर्व के अवसर पर स्मारिकाओं का प्रकाशन भी शुरू किया। ये स्मारिकाएँ वार्षिक हुआ करती थी जिनमें संस्था की विभिन्न गतिविधियों के आकलन के साथ ही साहित्य को भी प्रश्रय मिलता था। ऐसी स्मारिकाएँ बोकारो, जमशेदपुर, इन्दौर आदि शहरों से वार्षिक रूप से निकलती भी थी किन्तु उनकी सामग्री स्तरीय नहीं हुआ करती थीं। इन वार्षिक स्मारिकाओं में संकल्प, अर्पण एवं चेतना समिति की स्मारिका



का विशेष महत्व है। संकल्प लोक, लहेरियासराय के तत्वावधान में संकल्प स्मारिका 1984 से 1989 तक केवल पाँच अंक ही निकल सकी, किन्तु स्तरीय साहित्य की दृष्टि से इसकी सामग्री अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसके सम्पादक डा० रामदेव झा थे। अर्पण स्मारिका विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा प्रायोजित रहा है और यह लगभग बाइस वर्षों से डा० उमाकान्त झा द्वारा सम्पादित होता रहा है। परवर्तीकाल से श्री चन्द्रेश भी इसके सम्पादक रहे हैं। इसने किरण, मधुप आदि पर विशेषांकों के द्वारा स्तरीय स्मारिका के क्षेत्र में अपनी स्थान बनाये रखी है। चेतना समिति, पटना की स्मारिका भी संग्रहणीय हुआ करती हैं और इसमें विशिष्ट विद्वानों के आलेख एवं रचनाओं का संग्रह किया जाता रहा है। इन स्मारिकाओं को मैथिली के प्रमुख वार्षिक पत्रिकाओं के रूप में परिगणित किया जा सकता है।

**मिथिला आलोक**

1969 के फरवरी महीने से यह पत्रिका मासिक रूप में ओम प्रकाश उपाध्याय के सम्पादकत्व में फिरोजाबाद से प्रकाशित होती रही है। इसमे मुख्यता हिन्दी की रहती है किन्तु समय-समय पर मैथिली को भी स्थान दिया जाता रहा है। प्रवासी मैथिलों को अपने पूर्वज की भाषा का स्मरण दिलाने की दृष्टि से इसका महत्व है।

**शक्तिभूमि एवं अम्बर ज्योति**

1971 में लहेरियासराय से श्री नारायण झा के सम्पादकत्व में शक्तिभूमि नाम की मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। इसके केवल एक-दो अंक ही प्रकाशित हो सके। राजनीतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक निबन्धों के साथ कथा, कविता प्रकाशित करनेवाली यह पत्रिका सामान्य प्रकृति की थी। 1972 में छत्रधारी दास के सम्पादन में प्रकाशित अम्बर ज्योति भी इसी गतानुगतिकता पर आधारित मासिक संकलन था, जो कुछ दिनों के बाद ही कालकवलित हो गया।

**आहुति**

यह एक त्रैमासिक पत्रिका थी जो 1978 ई० में शैलेन्द्र आनन्द के सम्पादकत्व में लोहना से प्रकाशित हुई थी। इसके केवल तीन-चार अंक ही प्रकाशित हो सके। जनचेतना के उद्वेलन एवं साहित्य के माध्यम से सामाजिक विद्रूपता पर प्रहार करना इसका उद्देश्य था। नव्यता के नाम पर इसने विकृत साहित्य को ही प्रश्रय दिया था।

**रंगमंच**

यह अर्द्धवार्षिक पत्रिका कलकत्ता से श्रीरामलोचन ठाकुर के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई थी। इसका आरंभ 1973 में हुआ था किन्तु यह केवल एक अंक ही प्रस्तुत

कर सकी। मैथिली नाट्यसाहित्य का विवेचन-विश्लेषण एवं उसे समृद्ध करने के प्रयास के रूप में यह पत्रिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती रही है।

**मैथिली अनुसन्धान**

मैथिली में शोध-पत्रिका के रूप में इस पत्रिका का विशेष महत्त्व है। यह 1971 में प्रकाशित हुई थी। इसके सम्पादक थे सुधाकान्त मिश्र और प्रकाशन स्थल था इलाहाबाद। किन्तु इसका केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका।

**चरचा**

यह पत्रिका साप्ताहिक थी। यह 1974 के वसन्तपंचमी से दरभंगा से प्रकाशित हुई और इसके केवल पाँच अंक ही प्रकाशित हो सके। इसके सम्पादक थे रामचन्द्र मिश्र। इसे ललित नारायण मिश्र का वरदहस्त प्राप्त था। स्वभावतः यह काँग्रेस की नीतियों के समर्थन के लिये मैथिली माध्यम का राजनीतिक उपयोग करती रही। मिथिलांचल की समस्याओं की ओर इसने शासक वर्ग का ध्यान आकृष्ट कराने का प्रयास किया था।

**टटका**

इस नाम से एक साप्ताहिक पत्रिका जमशेदपुर से 1976 के आसपास प्रकाशित होती थी जिसे मैथिली आन्दोलन की पत्रिका के रूप मे उद्घोषित किया गया था। किन्तु अत्यन्त क्षीण कलेवर एवं अशिष्ट शब्दावली द्वारा पीत पत्रकारिता की दिशा में अग्रसर इस पत्रिका को महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया।

इसी नाम से दरभंगा से मैथिली विश्वविद्यापीट के स्वनामधन्य कुलपति दिनराज शांण्डिल्य द्वारा भी अपने संस्थान की ओर से एक पत्रिका प्रकाशित की जाती थी, जो साहित्यिक गतिविधियों के कारण महत्त्वपूर्ण मानी जाती रही।

**समाद और विकल्प**

1978 में बिहार सरकार ने 1948 में स्वीकृत मैथिली भाषा को प्रवेशिका परीक्षा की भाषा से निरस्त कर दिया था जिसके विरोध के लिये पटना से एक साप्ताहिक को माध्यम बनाया गया था। इसका नाम था 'समाद' और यह अभिन्न मित्र के सम्पादन में प्रकाशित होती थी। मिथिला-मैथिल-मैथिली के समस्याओं एवं बिहार सरकार की तत्कालीन अनीति के प्रति यह सजग हुई थी। चार अंकों के प्रकाशन के बाद इसके कार्यकर्त्ताओं के आपसी कलह के कारण इसके समानान्तर विकल्प नाम की एक पत्रिका अलग से प्रकाशित होने लगी। किन्तु बिहार सरकार द्वारा पुनः प्रवेशिका में मैथिली को यथावत् रहने देने के संकल्पके बाद ये दोनों पत्रिकाएँ स्थगित कर दी गयीं।



**ऊक**

यह पत्रिका 1972 में परेश कुमार झा के सम्पादकत्व में दरभंगा से प्रकाशित हुई थी ओर साप्ताहिक रूप में कुछ दिनों तक ही चल सकी। यद्यपि इसमें समाचार-विचार को ही प्रधानता दी जाती रही किन्तु कभी-कभी रचनात्मक साहित्य को भी इसने प्रश्रय दिया था। भाषिक विकृति के कारण यह स्वीकृति नहीं पा सकी।

**मिथिला मंच**

इस त्रैमासिक पत्रिका के एकमात्र अंक का प्रकाशन 1968 में मैथिल छात्र संघ काशी के तत्वावधान में हुआ था। मिथिला मोद के माध्यम से जिस काशी ने मैथिली पत्रकारिता के दीप को अत्यन्त प्रारंभिक काल में वर्षों तक जलाया था, उसी की स्मृति के रूप में इस पत्रिका अभियान को ऐतिहासिक माना जाता रहा है।

**मैथिली पारिजात**

इस पत्रिका के दो अंक मात्र दरभंगा से प्रकाशित हो सके। इसके सम्पादक थे रमानाथ मिश्र 'मिहिर' और घोषित आवृत्ति थी पाक्षिक। यह समाचार प्रधान पत्रिका थी तथा यह जनवरी-फरवरी 1964 में प्रकाशित हुई थी।

**मिथिलावाणी**

यह एक राजनीतिक विषय प्रधान साप्ताहिक पत्रिका थी जो 1968 के आसपास दरभंगा से प्रकाशित हुई और कुछ दिनों तक अनियमित रूप से चलकर स्थगित हो गयी। इसके सम्पादक थे योगेन्द्र झा जिनकी मनस्तुष्टि मात्र को इसकी उपलब्धि मानी जा सकती है।

**मिथिला अमर**

1967 में प्रवासी मैथिलों की एक पाक्षिक पत्रिका 'मिथिला अमर' रमेश चन्द्र ठाकुर के सम्पादकत्व में अलीगढ़ से प्रकाशित की जाने लगी। इसका स्वरूप जातीय था तथा प्रवासी मैथिलों के बीच यह सम्पर्क सूत्र के रूप में प्रायोजित थी। किन्तु इसके भी केवल छः अंक ही प्रकाशित हो सके।

**मातृवाणी**

यह पाक्षिक मैथिली पत्रिका संभवतः 1971 के आसपास से ए.सी. दीपक के सम्पादकत्व में लहेरियासराय से प्रकाशित होने लगी थी और कुछ ही समय में अत्यन्त लोकप्रिय हो गयी थी। इसकी लोकप्रियता का कारण इसकी भाषा में शालीनता का अभाव ही कहा जा सकता है जो ऋणात्मक होते हुए भी पत्र के प्रति लोगों का आकर्षण

बनाने में सक्षम हुई थी। यह सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक क्षेत्र मे व्याप्त विद्रूपों को नग्न यथार्थ के रूप मे समक्ष रखने के लिए विख्यात हुई। किन्तु मैथिली की समस्याओं के प्रचार में अपनी समस्त शक्ति लगा देनेवाली इस पत्रिका की शब्दावलियों के आधार पर इसे पीतपत्र की श्रेणी में ही रखा जा सकता है।

**मिनी पत्रिका – मि०**

मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में यह नूतन प्रयोग श्री वीरेन्द्र मल्लिक एवं श्री गुणनाथ झा द्वारा 1970 में किया गया था। इसे कलकत्ते से प्रकाशित किया गया था और संभवतः इसका केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका। यह पत्र खासकर अपने आकार (दस से०मी० × 6 से०मी०) के लिये प्रसिद्ध हुई थी। मैथिली कविता एवं कथा में पारम्परिकता का विरोध एवं नव्यता के सृजन का मार्गदर्शन ही इसका अभिप्रेत जान पड़ता है। अपने आकार के अनुरूप ही इसने कुछ मिनी कविताओं एवं कथाओं का प्रकाशन किया था जिनका ऐतिहासिक महत्त्व है।

**अनामा-कथादिशा**

नवम्बर 1965 में कालपुरूष के छद्मनाम से पटना से एक अनियतकालीन पत्रिका प्रकाशित हुई जिसके केवल तीन अंक मात्र प्रकाशित हो सके। परवर्त्तीकाल में पटना से ही श्रीगंगेश गुञ्जन और प्रभास कुमार चौधरी के सम्पादकत्व में इसके तीन अंक और नवम्बर 1978 से जनवरी 80 के बीच विशुद्ध कथा मासिक के रूप में कुछ अंक प्रकाशित हुए। परवर्त्तीकाल में यही कथामासिक कथादिशा के नाम से कुछ महीनों तक प्रकाशित होती रही। आधुनिक मैथिली में नव्यतम कथा साहित्य के विकास में इसका योगदान महत्त्वपूर्ण है। इसने प्राचीन एवं अर्वाचीन कथाकारों को एक मञ्च पर लाने की पुरजोर कोशिश की तथा इसमें इसे सफलता भी मिली थी। इसका विशेषांक महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

**मातृभूमि**

यह साप्ताहिक मैथिली पत्रिका लहेरियासराय से प्रो० सोमदेव के सम्पादन में अनियमित रूप से 1971 के आसपास प्रकाशित होती रही। यह राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों से सम्बन्धित समाचार-विचार को प्रश्रय देती रही और कभी-कभी इसके द्वारा साहित्यिक सामग्रियों का भी प्रकाशन होता रहा।

**सामयिक संकलनपरक पत्रिकायें**

आठवें दशक में पारम्परिकता एवं आधुनिकता का विवाद चरम पर हो चला था। नवीन रीति के साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं विकास की दृष्टि से इस समय अनेक



पत्रिका रीति के सामयिक एवं अनियतकालीन संकलन प्रकाशित हुए जैसे **चाङुर, सन्निपात, अग्निपत्र, माहुर, भुम्हुर, भूर, शिखा, लालधुआँ, संकल्प, अक्षत, मिथिला समुदाय, फराक** आदि। ये पत्रिका के आकार-प्रकार में ही दीख पड़े।

चाङुर का प्रकाशन सहरसा से 1962 में हुआ था और इसके सम्पादक का छद्मनाम था जटायु। इसका प्रथम अंक टंकित एवं आगे का दो अंक मुद्रित होकर प्रकाश में आया था। इसका सम्पादकीय 'नोछाड़' शीर्षक से निकलता था। स्वभावतः यह पारम्परिक मैथिली साहित्य का विरोध एवं नव्यतम साहित्य के प्रोत्साहन पर विश्वास रखता था। इसने अनेक तरुण कवियों एवं लेखकों को साहित्य क्षेत्र में प्रवेश कराया। लघुकथा विशेषांक इसकी उपलब्धि कही जा सकती है।

**सन्निपात** पटना से कुलानन्द मिश्र एवं मोहन भारद्वाज के संयुक्त सम्पादकत्व में 1986 के आसपास प्रकाशित हुई थी और पाँच अंकों के बाद यह भी स्थगित हो गयी थी। पारम्परिकता के प्रति इसका स्वर भी विद्रोही था। बौद्धिक स्वास्थ्य से प्रसूत रचनाओं के प्रकाशन हेतु इसने सामूहिक किंवा नैयक्तिक मार्ग खोजने का प्रयास किया था।

**अग्निपत्र** कलकत्ता से श्रीवीरेन्द्र मल्लिक के सम्पादकत्व में 1973 में प्रकाशित हुई थी। यह अपने आधुनिक साज-सज्जा और विषय चयन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थो। इसके माध्यम से अग्निजीवी साहित्यकारों का एक वर्ग उदित हुआ था जो नवलेखन में स्थान बनाने को आतुर थे। किन्तु यह अनियतकालीन के रूप में यदा-कदा प्रकाशित होती रही। बाद में श्रीरामलोचन ठाकुर इसके सम्पादक हुए।

**माहुर** के सम्पादक थे हरजीत सिंह, भुम्हुर के दयानन्द मिश्र और भूर के श्रीनूतन राकेश। ये सामयिक संकलन भी पत्रिका के स्वरूप में केवल एक-एक अंक ही प्रकाशित हुए तथा मैथिली नवलेखन को प्रोत्साहित किया।

**शिखा** पत्रिका का प्रकाशन 1974 से आरम्भ हुआ था और इसके सम्पादक थे कुणाल और अग्निपुष्प। यह कलकत्ता एवं दरभंगा से प्रकाशित हुआ था। नव लेखन के स्थापना के लिये परम्परा के प्रति अमर्यादित भाषा के प्रयोग की दृष्टि से इसे वाहवाही मिली थी। इसे मैथिली पत्रकारिता के अवमूल्यन के दृष्टान्त की तरह ही देखा जा सका।

**लालधुआँ** का प्रकाशन शिवनगर, मधुबनी से 1976-77 में हुआ था और इसके सम्पादक थे अष्टावक्र। यह भी अनियतकालीन पत्रिका थी जिसके सात-आठ अंक मात्र प्रकाशित हो सके थे।

श्रीकेदारकानन द्वारा प्रायोजित संकल्प पत्रिका भी सामयिक संकलन थी। इसका प्रकाशन सुपौल से 1980 ई० में हुआ था और पुष्ट कलेवर के साथ ही नवलेखन को प्रोत्साहन एवं स्थापना में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

1963-64 में सरिसबपाही से **अक्षत** नाम का संकलन प्रकाशित होता रहा जिसने मैथिली साहित्य के विकास में सुदूर ग्रामाञ्चल के प्रयत्न को रेखांकित करने का प्रयास किया था।

1975-76 में दिल्ली से श्री उमानन्द मिश्र के सम्पादन में **'मिथिला समुदाय'** सामयिको के दो अंक प्रकाशित हुए थे। इसका ललित नारायण स्मृति अंक विशेष उपादेय सिद्ध हुआ।

फराक 1976-77 में पटना से कुलानन्द मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई थी और इसके केवल तीन अंक ही प्रकाशित हो सके। मैथिली की गतिविधि पर सम्पूर्णतया एकाग्र रहते हुए इस संकलन ने नवलेखन में अनास्थावाद को स्थापित करने का प्रयास किया था तथा मैथिली क्षेत्र में होनेवाली अनीतियों का पर्दाफास करने में सफल हुई थी। कविता, कथा एवं विचारप्रधान निबन्धों की दृष्टि से यह ऐतिहासिक महत्त्व की पत्रिका थी।

इसी क्रम में रायपुर से प्रकाशित मिथिलायतन पत्रिका की भी चर्चा की जा सकती है जो प्रवासी मैथिलों के अन्तःसम्बन्ध का संपूरक कही जा सकती है।

उपर्युक्त सामयिक संकलनों ने मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में व्याप्त व्यक्तिवादी मनोवृत्ति को ही उजागर किया है, जिसमें सम्पादकीय व्यक्तित्व एवं वर्चस्व का संपोषण ही प्रमुख दीखता है। मैथिली साहित्य के विकास की दृष्टि से इनके महत्त्व को न्यून नहीं कहा जा सकता, किन्तु मैथिली पत्रकारिता को ठोस अवलम्ब मिलने की दृष्टि से इस प्रकार की प्रवृत्ति को धातक ही कहा जा सकता है, जिसके कारण मैथिली में पत्रकारिता आज भी साहित्यकारिता से आगे नहीं बढ़ पायी और न अब तक एक निरन्तर संचरणशील पत्र ही सामूहिक प्रयत्न के आधार पर व्यवस्थित हो सको।

## मैथिली बुलेटिन

कलकत्ता सांस्कृतिक परिषद् के द्वारा अपनी गतिविधियों, मिथिला-मैथिल-मैथिली की समसामयिक समस्याओं एवं मैथिली आन्दोलन एवं उपलब्धियों से सम्बन्धित विमर्शों पर आधारित एक पत्र का प्रकाशन असामयिक रूप से किया जाता रहा है, जो मैथिली बुलेटिन के नाम से प्रकाशित होती रही है। इसे समाचार-विचार की अनियतकालीन मैथिली पत्रिका के रूप में देखा जाता रहा है।



## देसकोस

1981 में श्रीविनोद कुमार झा के सम्पादन में कलकत्ते से इस पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ था। यह मासिक पत्रिका समाचार-विचारों पर आधारित थी। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों तथा मिथिला-मैथिल-मैथिली की समस्याओं के साथ ही विविध साहित्यिक विधाओं एवं स्तम्भ लेखनों के कारण यह पत्रिका मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में अत्यधिक लोकप्रिय एवं स्तरीय सावित हुई। किन्तु यह पत्रिका भी शीघ्र ही स्थगित हो गई।

## विदेह

यह पत्रिका मासिक के रूप में ही 1981 से बम्बई से श्रीमती कल्पना मिश्र के सम्पादन में प्रकाशित हुई थी। मैथिली में पहली बार महिला द्वारा संचालित होने के कारण इसका खास महत्त्व है।

## स्वाती

यह पत्रिका त्रैमासिक थी और महिला द्वारा ही प्रायोजित हुई थी। मुजफ्फरपुर से श्रीमती कमला चौधरी के सम्पादकत्व में इसके केवल चार अंक ही प्रकाशित हो सके। यह पत्रिका 1984-85 मे प्रकाशित हुई थी और इसे साहित्य के साथ-साथ महिला वर्ग के विषयों पर अधिक केन्द्रित किया गया था।

## माटि-पानि

यह पत्रिका अगस्त 1983 से श्री उदय चन्द्र झा 'विनोद' एवं श्री त्रिभूति आनन्द के संयुक्त सम्पादकत्व में पटना से प्रकाशित हुई थी जो करीब 18 अंकों तक प्रकाशित होती रही। विभिन्न स्तम्भों से समन्वित यह पत्रिका समाचार-विचारों एवं साहित्यिक-राजनीतिक निबन्धों के द्वारा मैथिली पत्रकारिता को नूतन आयाम देने में सफल कही जा सकती है।

## कोसी कुसुम

यह पत्रिका सहरसा से श्रीमती अम्बिका मिश्र के सम्पादकत्व में जनवरी 1984 से आरंभ हुई थी और शुरू से ही अनियमितता से ग्रस्त रहती हुई यदा कदा प्रकाशित होती रहती है।

## ज्ञानलोक

यह त्रैमासिक पत्रिका थी और इसके सम्पादक थे श्री अशोकनाथ झा 'अशोक'। सरिसब से प्रकाशित इस पत्रिका के केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके और 1984 में प्रायोजित यह पत्रिका उसी साल कालकवलित हो गयी।

## बसात

दिसम्बर 1985 से दरभंगा से हंसराज एवं श्रीकृष्णकुमार के सम्पादकत्व में प्रकाशित अभिनव तेवर एवं कलेवर से युक्त यह मासिक पत्रिका शीघ्र हीं अनियमितता ग्रस्त होकर कालकवलित हो गयी। मिथिला को सांस्कृतिक गरिमा एवं सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रोत्साहन इसका उद्देश्य रहा था। इसने जनजीवन के यथार्थ को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का संकल्प लिया था।

## सन्दर्भ

इस मासिक पत्रिका के मात्र दो अंक ही 1986 में श्री नरेन्द्र के सम्पादकत्व में दरभंगा से ही प्रकाशित हुई थी, किन्तु रचनात्मक साहित्यिक विधाओं को अग्रेषित करने की गतानुगतिकता के अतिरिक्त इसका कोई खास मूल्य नहीं कहा जा सकता।

## चिनगी

यह द्वैमासिक पत्रिका थी और दरभंगा से ही जनवरी 1986 से प्रकाशित हुई। इसके केवल सात अंक प्रकाशित हो सके। यह साम्यवादी दल की मुखपत्रिका थी और मैथिली साहित्य में साम्यवादी विचारधारा के संप्रेषण की दृष्टि से इसका अभ्युदय हुआ था। इसके अनेक सम्पादकगण हुए जिनमें रामचैतन्य 'धीरज', सोमदेव, रमानन्द रेणु, पूर्णेन्दु चौधरी, चन्द्रेश आदि का नाम उल्लेखनीय है। इसके द्वारा मणिपद्मजी का उपन्यास 'आदिम गुलाम' प्रकाशित किया गया था जो साहित्य क्षेत्र में इसकी उपलब्धि कही जा सकती है। इसका जनवादीलेखन विशेषांक महत्वपूर्ण है।

## लोकवेद

श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' एवं श्री महेन्द्र मलंगिया के संयुक्त सम्पादन में यह पत्रिका रहिका, मधुबनी से अक्टूबर' 86 से प्रकाशित हुई। यह मासिक पत्रिका थी। इसके केवल चार अंक ही प्रकाशित हुए। विषय वस्तु एवं सजावट की दृष्टि से यह उत्कृष्ट पत्रिका थी और इसकी साहित्यिक रचनाएँ भी स्तरीय हुआ करती थीं।

## हालचाल

दिसम्बर 85 से पटना से प्रकाशित इस पत्रिका के संचालक थे श्रीगोपीकान्त झा। इस पत्रिका के अनेक सम्पादक हुए। यह पत्रिका दिसम्बर 87 तक प्रयोगांकों के रूप मे अनियमितापूर्वक प्रकाशित होती रही। इसपर देसकोस और माटिपानि का प्रभाव देखा जाता है। किन्तु स्तरीयता की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत न्यून कोटि की थी।



## भाखा

फरवरी'87 से पटना से ही इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन श्री विभूति आनन्द के सम्पादकत्व में मार्च 88 तक होता रहा। पुन: यह पत्रिका डा० जयकान्त मिश्र और पं० श्री गोविन्द झा के संयुक्त सम्पादकत्व में सितम्बर 88 से प्रकाशित होकर कुछ अंकों के बाद स्थगित कर दी गयी। प्रारंभ मे इस पत्रिका में जहाँ नवलेखन के प्रति समर्पण को भावना दीख पड़ी, वहीं परवर्त्ती काल में इसने स्तरीय साहित्यिक पत्रिका का रूप धारण कर लिया था।

## कुशलक्षेम

यह पत्रिका अक्टूबर-88 से सिंहवाड़ा, दरभंगा से चौधरी कौशल किशोर ठाकुर एवं श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई और इसके दो-तीन अंक ही प्रकाशित हो सके। यह पत्रिका कोइ खास आदर्श उपस्थापित न कर सकी अपितु गतानुगतिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में जानी जाती रही है। मिथिला के ग्राम्य क्षेत्र से मैथिली पत्रकारिता की अभिवृद्धि की दिशा में प्रयास का यह एक उदाहरण मात्र प्रस्तुत कर सकी।

## पुष्पांजलि

यह पत्रिका देवघर से श्रीयमुनानन्द सिंह झा के सम्पादकत्व में दिसम्बर'88 में प्रयोगांक के रूप में प्रकाशित हुई थी तथा दो-तीन अंक के बाद स्थगित हो गयी थी। इसका उद्देश्य था मिथिला-मैथिल-मैथिली संस्कृति का प्रचार-प्रसार। इसे भी विशुद्ध साहित्यिक पत्र ही कहा जा सकता है।

## कूस एवं दृष्टि

मैथिली में मिनीपत्रिका के प्रयोग की दृष्टि से कूस दूसरे स्थान पर है। यह अत्यन्त लघु आकार की पत्रिका थी जिसके सम्पादक थे श्रीविभूति आनन्द और इसका प्रकाशन पटना से दिसम्बर'86 में हुआ था। इसका महत्त्व केवल अभिनव प्रयोग की दृष्टि से ही माना जा सकता है। श्रीविभूति आनन्द द्वारा 1987 में पटना से प्रकाशित दृष्टि पत्रिका भी मैथिली पत्रों की नामावली में एक अंक के योगदान के रूप में ही परिगणित की गयी।

## अनुवार्त्ता

यह पत्रिका कलकत्ता से मासिक के रूप में निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका थी। यह श्रीकौशलेन्द्र झा के सम्पादकत्व में अनियमित रूप से 1993-95 में प्रकाशित

होती रही। समाचार-विचारों का पुट भी इसमें रहता था। मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में इसने कोई विशेष दृष्टि प्रदान की हो, ऐसा नहीं जान पड़ता।

**कचोट**

यह पत्रिका सामयिक पत्रिका थी और इसके आवृत्ति का कोई नियत क्रम नहीं था। इसका प्रकाशन जमशेदपुर से होता था और सम्पादक थे श्रीअशोक 'अविचल'। वर्ष 1999 से इसके अनेक अंक प्रकाशित हुए हैं। यह साहित्य संवर्द्धन को अपना लक्ष्य कहती है, किन्तु मिथिला राज्य आन्दोलन से अप्रत्यक्ष रूप से संपृक्त जान पड़ती है।

**मैथिल जन**

यह मासिक पत्रिका वर्ष 2000 में दिल्ली से श्री युगलकिशोर ठाकुर के सम्पादन में प्रकाशित हुई थी। यह भी अल्पजीवी ही साबित हुई। इसे आम मैथिलों के लिये मातृभाषा में मासिक पत्र कहा गया है। किन्तु ऐसी कुछ विशिष्टता इस पत्र में नहीं है जिससे इसे सामान्य जनों की पत्रिका कही जा सके। इसमें मिथिला से सम्बन्धित समाचार-विचार, साहित्यिक रचनाएँ एवं विविध स्तम्भ सामान्य मैथिली साहित्यिक पत्रिकाओं की भाँति ही दीख पड़ते हैं।

**जन मंथन**

यह एक असामयिक मैथिली पत्रिका थी जो पूर्णतः साहित्य को समर्पित थी। इसके दो तीन अंक मात्र प्रकाशित हो सके। इसके सम्पादक थे डा० हरिश्चन्द्र झा और मोहन मिश्र तथा यह दिल्ली से प्रकाशित होती थी। इसका प्रकाशन काल संभवतः 2003 रहा है।

**कोशी-कमला**

यह त्रैमासिक मैथिली पत्रिका वर्ष 1991 से श्री त्रिलोकनाथ मल्लिक के सम्पादकत्व में लहेरियासराय से प्रकाशित हो रही थी और अनियमित रूप से वर्ष 1995 तक प्रकाशित होती रही। साहित्य संवर्धन ही इसका लक्ष्य दीखता है।

**आँखि-पाँखि**

तरुण मिथिला प्रकाशन, माऊँबेहट, मनीगाछी, दरभंगा से श्री चन्द्रेश के सम्पादकत्व में एक क्षीण कलेवर से युक्त पुस्तकाकार पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1991 में किया गया था, जिसके केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके। इसे द्वैमासिक कहा गया था। रचनात्मक साहित्य एवं साहित्यिक आलेखों पर आधारित इस पत्रिका में रचनाशील प्रतिभाओं को प्रकाशन में लाने की मानसिकता परिलक्षित हुई। 'समसामयिक' शीर्षक से इस पत्र में सम्पादकीय हुआ करता था जो लोकचेतना का संवाहक दीखता है।



**मैथिलीआलोचना**

फरवरी 1992 मे श्रीमोहन भारद्वाज के सम्पादकत्व में दरभंगा से एक अनियतकालीन आलोचना पत्रिका का केवल एक अंक ही प्रकाशित हो सका जिसे मैथिली पत्रकारिता मे गतानुगतिक प्रयोग मात्र कहा जा सकता है।

**चतुरंग**

15 अगस्त 1992 को श्री अनिल कुमार 'अनल' के सम्पादकत्व में आशापुर चौक, बेनीपुर, दरभंगा से चतुरंग मासिक पत्र का शुभारंभ किया गया था। यह भी एक गतानुगतिक साहित्यिक पत्रिका ही थी। सम्भवतः इसके केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके।

**मिथिला परिक्रमा**

यह मासिक मैथिली पत्रिका वर्ष 1993 में मिरजापुर दरभंगा से डा० शंकर कुमार झा के सम्पादन में प्रकाशित हुई थी। कुछ अंकों के बाद यह स्थगित हो गयी। मैथिली की सामान्य पत्रिकाओं की तरह यह भी समाचार-विचारों के साथ ही साहित्यकारिता तक ही सीमित रही।

**धार**

किसुन संकल्प लोक, सुपौल द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका के सम्पादक थे निर्भय। संभवतः 1993 से 1995 के बीच इस अनियतकालीन पत्रिका के तीन अंक क्रमशः मैथिली के तीन लेखकों महाप्रकाश, मन्त्रेश्वर झा एवं उपेन्द्र दोषी पर केन्द्रित प्रकाश मे आ सके। अनालोचित लेखकों एवं मैथिली पाठकों के बीच इस पत्रिका ने सेतु का कार्य करने का उद्देश्य अपनाया था किन्तु मैथिली पत्रकारिता में एक शैली मात्र का प्रदर्शन कर यह कालकवलित हो चली।

**मिथिला समाद**

यह पत्रिका 1995 से 2000 के बीच अपने 22 अंकों के द्वारा कलकत्ते से मैथिली आन्दोलन का अलख जगाती रही। इसके सम्पादक श्री कमलेश झा रहे हैं। समाचार-विचारों के अतिरिक्त इसके माध्यम से निबन्ध, कविता, कथा आदि विधाओं में रचनात्मक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन दिया जाता रहा।

**जानकी**

यह त्रैमासिक मैथिली पत्रिका 1997 से धनबाद से प्रकाशित होती रही है और मैथिली साहित्य के विकास की दृष्टि से वस्तुतः झारखंड की प्रहरी रही है। इसके सम्पादक रहे हैं श्रीराधाकृष्ण। इधर कुछ दिनों से इसका प्रकाशन अवरूद्ध हो गया दीखता है।

**मिथिलाप्रकाश**

वर्ष 1998-99 में मिथिला प्रकाश नाम की पत्रिका श्री प्रकाश झा के सम्पादकत्व में दिल्ली से प्रकाशित होने की सूचना है जिसके केवल चार-पांच अंक ही प्रकाशित हो सके। यह भी गतानुगतिक मैथिली पत्रिकाओं की तरह साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ी रही।

**कोकिल मञ्च**

कोलकाता की कोकिल मञ्च नाम की नाट्य संस्था अपनी गतिविधियों के परिचय से सम्बन्धित एक वार्षिक पत्रिका 1999 से श्री परमानन्द लाल, श्री किशोरी कान्त मिश्र, श्री नबोनारायण मिश्र आदि के सम्पादकत्व में प्रकाशित करती रही है जिसमें कुछेक साहित्यिक विधाओं के प्रकाशन द्वारा कोलकाता के प्रवासी लेखकों को अभिव्यक्त कराने का प्रयास किया जाता रहा है। मैथिली से सम्बन्धित संस्थाओं की जीवन्तता की दृष्टि से इसका महत्व है।

**भोर**

भोर नाम की पत्रिका श्री अविनाश के सम्पादकत्व में दरभंगा से केवल एक अंक प्रकाशित होकर स्थगित हो जाने की सूचना है। यह मैथिली के वरेण्य कवि श्रीजीवकान्तजी की कविताओं पर आधारित थी।

**आकांक्षा**

जनवरी 2000 से डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र के सम्पादकत्व में लालबाग, दरभंगा से एक मासिक पत्र का संचालन किया जाता रहा जो बीच-बीच में संयुक्तांको के सहारे मार्च 2001 तक चलती रही। इसे विकासोन्मुख मिथिलांचल का आकांक्षी कहा गया था। इसके सम्पादक ने साहित्यिक गुटबन्दी, क्षेत्रीय राजनीति और पूर्वाग्रहग्रस्तता को मैथिली पत्रिका के अधोगति का कारण मानते हुए समाचार-विचारों के साथ ही साहित्यिक, स्त्री समाज, बालमनोविज्ञान, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक निबन्धों, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित सामग्रियों का संचयन कर स्वस्थ पत्रकारिता की दिशा में प्रयास किया था।

**मैथिली टाइम्स**

यह मैथिली मासिक पत्रिका दिल्ली से प्रकाशित हुई थी। इसके सम्पादक थे श्रीविपिन बादल तथा इसका प्रकाशन अक्टूबर'2000 से प्रारंभ हुआ था। यह समाचार-विचारों की प्रधानता से युक्त थी किन्तु कुछ रचनात्मक साहित्य भी इसके माध्यम से प्रकाशित किये जाते रहे।



**जय मिथिला**

यह पूर्णत: राजनीतिक पत्रिका थी जिसके सम्पादक थे प्रो० सुरेश्वर झा। इसका प्रकाशन पटने से होता था तथा वर्ष 2001 में चार अंकों के प्रकाशन के बाद इसे स्थगित कर दिया गया। इसका एकमात्र उद्देश्य मिथिला राज्य अभियान का संचालन था।

**मिथिला सुरभि**

इसे त्रैमासिक कहा गया है किन्तु यह अनियतकालीन रही है। इसके सम्पादक रहे हैं श्री चन्द्रेश एवं परवर्ती काल में किशोर कुमार झा 'सिक्किन'। इसका प्रकाशन आँकुश समिति, बहेड़ी, दरभंगा द्वारा किया जाता रहा है। यह पत्रिका 2001 से प्रारंभ हुई और यदा कदा प्रकाशित होती रही है। यह भी पूर्णत: साहित्यिक रचनाओं को ही प्रकाशित करती रही है किन्तु इसमें स्तरीयता पर ध्यान नहीं दिया जाता रहा है, जिससे इसका स्वरूप केवल व्यावसायिक दृष्टि से उद्भूत पत्रिकाओं के समान ही दीख पड़ता है। स्वभावत: इसका अवदान यही कहा जा सकता है कि नूतन-पुरातन लेखकों को इसने एक मंच पर लाने का प्रयास किया है। इसका वर्ष 2 अंक 4 (फरवरी-अप्रील 2004) साहित्य महारथी सुमन विशेषांक अत्यन्त सुनियोजित प्रयत्न रहा।

**बागमती दामोदर टाइम्स**

यह त्रैमासिक पत्रिका थी और बदरपुर, दिल्ली से श्रीमनोज कुमार झा के सम्पादकत्व में प्रकाशित होती रही। इसका प्रकाशन काल 1997 से 2003 के आसपास तक रहा। यद्यपि इसने अपने को साहित्य एवं संस्कृति को समर्पित कहा है, किन्तु साज-सज्जा में प्रशस्त रहते हुए भी इस पत्रिका ने न तो साहित्य रचना एवं प्रकाशन की दृष्टि से ही महत्ता प्राप्त की और न इसके द्वारा किसी सांस्कृतिक गतिविधि का ही संचालन दीख पड़ा। हल्के-फुल्के निबन्धों एवं रचनाओं के द्वारा प्रवासी मैथिल समाज को अपनी भाषा के प्रति प्रतिबद्ध रखना मात्र इसका उद्देश्य दीखता है। प्रवासी रचनाकारों के लिये यह अभिव्यक्ति का सशक्त साधन अवश्य बनी हुई दीखती है।

**अन्तिका**

जनवरी 1999 में प्रादुर्भूत 'अन्तिका' मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नियामक कदम के रूप में प्रकट हुई थी। साज-सज्जा, विषय-वस्तु एवं छपाई-सफाई की दृष्टि से इसने मैथिली पत्रकारिता में नवयुग के प्रवेश का दस्तक दिया था। इसने अपने को परिवर्त्तनकामी रचना का संवाहक त्रैमासिक कहा था और इसे साबित करने में

सफलता भी हासिल कर रही थी। इसके सम्पादक रहे हैं श्री अनलकांत। किन्तु क्रमशः साहित्यिक राजनीति के परम्परा-आधुनिकता के जाल में फँस कर इसने अभद्रतापूर्ण पीत पत्रकारिता की ओर अपना मुख मोड़ लिया और रोगग्रस्त होकर स्थगन की स्थिति में आ गयी। अष्टम् अनुसूची में मैथिली के स्थान के बाद इस पत्रिका के पुनः कुछेक अंक प्रकाशित हुए हैं।

**देशज**

नव सहस्राब्दी के आरंभ में 'शताब्दीक आरंभ मे मैथिली कविता' की स्थिति पर सुनियोजित प्रकाश डालने की सूक्ष्म दृष्टि से सम्पन्न श्रीतारानन्द वियोगी एवं अविनाश के सम्पादन में एक भव्य वार्षिक पत्रिका का विशेषांक 'देशज 2001' नाम से महिषी, सहरसा से प्रकाशित हुआ था जो सम्पूर्णता में आधुनिक मैथिली कविता पर विमर्श पर आधारित था। इसके प्रकाशन से मैथिली की नर्गीय पत्रिका को राष्ट्रीय भाषाओं की तरह अस्मिता के बोध को प्रश्रय मिला था। मैथिली को संवैधानिक मान्यता से पूर्व राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं की समकक्षता को ध्यान में रखते हुए इस प्रयोग का विशेष महत्व है।

**देसिल वयना**

यह मासिक पत्रिका नवम्बर 2002 से श्री रजनीकान्त चौधरी के सम्पादकत्व मे पटने से प्रकाशित होकर केवल चार अंकों के बाद स्थगित हो गयी। समाचार-विचारों के साथ ही इसने साहित्य, रंगमंच, खेलकूद, चित्रपट आदि विविध विषयों को समाहित करने का प्रयास किया था।

**आंकुर**

वर्ष 2002 से दिल्ली के मिथिला कर्मी समिति द्वारा श्री दिलीप कुमार झा के सम्पादकत्व में एक त्रैमासिक मैथिली पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। प्रवासी मैथिलों के बीच अभिव्यक्ति एवं सम्पर्क के साधन के रूप में व्यवहृत इस पत्रिका ने प्रवासी मैथिलों के बीच भाषिक प्रतिबद्धता के प्रतीक के रूप में ही पहचान बनाई है।

**लोरिक सलहेस दीनाभद्री**

पत्रकारिता के माध्यम से पुस्तक प्रकाशन को दृष्टिपथ पर रखते हुए श्री चन्द्रेश के सम्पादन में लोरिक सलहेस दीनाभद्री नामके अनियतकालीन मैथिली पत्रिका का पकाशन जनवरी 2003 से आरम्भ किया गया था। श्री बुचरू पासवान रचित एकांकी 'भ्रूण हत्याक समाज पर कुप्रभाव' एवं श्री चन्द्रेश रचित 'दाम' एवं 'खील' एकांकी नाटक का प्रकाशन ही इसका मूल उद्देश्य जान पड़ता है जो 'तिनसुतिया' नाम के पुस्तक



का आधार बना। डा० जयकान्त मिश्र, हंसराज, श्रीकिशोरी कान्त मिश्र, आचार्य नाजिम रिजवी आदि की रचनाओं, प्रशंसा पत्रों एवं साक्षात्कारों से मंडित इस पत्रिका का ऐतिहासिक महत्व मात्र है। इसका दूसरा अंक जून 2005 में प्रकाशित हुआ है।

**सूत्रधार**

मैथिली प्रेरणा परिषद्, सहरसा के तत्वावधान में सहरसा से जून 2003 एवं अगस्त 2004 में सूत्रधार नाम की पत्रिका का प्रकाशन श्रीमोहन यादव के सम्पादकत्व में हुआ था जो एक स्तरीय पत्रिका के रूप में उदित होकर कालकवलित हो गयी जान पड़ती है। इसे मैथिली में प्रगतिशील लेखन की पत्रिका कही गयी है। इसका द्वितीय अंक कोशी क्षेत्र पर आधारित होने के कारण वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**भोरुकबा**

यह पत्रिका वर्ष 2003 से श्री अमरनाथ झा 'भारती' के सम्पादकत्व में कोलकाता से प्रकाशित होती रही। लघु आकार के होते हुए भी इसने स्तरीय कविताओं, कथाओं एवं निबन्धों को प्रस्तुत कर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

**प्रवासी**

यह एक त्रैमासिक पत्रिका थी जो मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग द्वारा प्रकाशित की जाती रही। इसके सम्पादक श्री किशोरनाथ झा एवं अन्य रहें हैं। इसका प्रकाशन 1995 से ही होता रहा है। इसके द्वारा प्रायोजित प्रभास कुमार चौधरी विशेषांक सर्वथा संग्रहणीय है।

इसी नाम से हैदराबाद से भी एक पत्रिका निकली थी जो 1992 से वार्षिक रूपेण प्रकाशित होती रही। यह मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, हैदराबाद की गृह पत्रिका कही गयी है तथा इसका महत्त्व स्मारिका के रूप में है।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त जिन पत्रिकाओं ने भले अल्प अवधि के लिये ही क्यों नहीं, अपनी अस्मिता दिखाकर मैथिली भाषा-आन्दोलन को तीव्रगामी बनाने का अपने-अपने ढंग से प्रयास किया तथा मैथिली साहित्य को समृद्ध करने में अपनी भूमिका का निर्वाह किया, उनमें कुछ परिगणनीय हैं, जैसे मार्च 81 से दिल्ली से प्रकाशित 'तिरहुत मेल' साप्ताहिक; मार्च 84 से मधुबनी से प्रकाशित 'नोन तेल' मासिक; जनवरी 86 से जमशेदपुर से प्रकाशित 'मिथिलावाणी' मासिक, सितम्बर 84 से

बरौनी से प्रकाशित 'मिथिलासौरभ' अनियतकालीन आदि। राँटी, मधुबनी से प्रकाशित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'जिज्ञासा' मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में 1995-96 में एक मानक के रूप में समक्ष आयी अवश्य, किन्तु दो तीन अंकों तक छपकर यह भी कालकवलित हो गयी। इसके माध्यम से तेजनाथ झा लिखित एवं डा० रमानन्द झा 'रमण' द्वारा सम्पादित नाटक 'सुरराजविजय' का प्रकाशन इसकी अन्यतम उपलब्धि मानी जा सकती है।

पटना स्थित नाट्यमंच 'अरिपन' का श्री योगेन्द्र नारायण मल्लिक द्वारा सम्पादित स्मारिका (2001), विद्यापति परिषद, समस्तीपुर का श्री नरेश कुमार विकल द्वारा सम्पादित स्मारिका (2005) आदि प्रयोजनमूलक पत्रकारिता के दृष्टान्त के रूप में परिगणनीय रहे हैं।

## नेपालीय मैथिली पत्रिकायें

नेपाल और मिथिला का सांस्कृतिक सम्पर्क एवं नेपाल तराइ क्षेत्र के वासियों की मातृभाषा मैथिली होने से नेपालीय मैथिली पत्रिकाओं को भी भारत में अत्यन्त स्नेह की दृष्टि से देखा जाता है तथा साहित्यिक रचनाओं का आदान-प्रदान दोनों ही देशों की मैथिली पत्रिकाओं में होता रहता है। इस दृष्टि से नेपालीय मैथिली पत्रिकाओं पर विचार करना आवश्यक है। नेपाल में मैथिली पत्रकारिता का आरंभ त्रिभाषिक पत्र नवजागरण (1 चैत्र 2016 वि०) से माना जाता है। इसके मैथिली भाग के सम्पादक थे सूर्यकान्त झा। विक्रम वर्ष 2026 से नेपाल में तीन मैथिली पत्रिकाओं का उदय हुआ जिनके द्वारा प्रभूत मैथिली साहित्य प्रकाश में आ सका। इनमें 'फूलपात' के सम्पादक थे सुन्दर झा 'शास्त्री'; 'इजोत' के सम्पादक थे डा० हरदेव मिश्र और 'मैथिली' एक सम्पादक मण्डल के द्वारा सम्पादित होता था। इन तीनों पत्रों के माध्यम से नेपाल में उपलब्ध प्राचीन मैथिली साहित्य का प्रकाशन किया जाता रहा। ये पत्रिकाएँ संकलनात्मक एवं अनियतकालीन प्रकृति की थीं।

नेपाल से जिन पत्रिकाओं का प्रकाशन होता रहा है, उनकी नियमितता बाधित दीखती है और यदाकदा इनका प्रकाशन होता रहता है। इस प्रकार के पत्रों में जनकपुर से प्रकाशित 'गामघर' साप्ताहिक का विशेष महत्त्व है। इसके सम्पादक रहे हैं श्रीरामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'। इसके अतिरिक्त राजविराज से प्रकाशित त्रैमासिक पत्र दुभि-धान, जनकपुर से प्रकाशित मासिक 'हिलकोर'; डा० रेवती रमण लाल के सम्पादकत्व में जनकपुर से प्रकाशित त्रैमासिक पत्र 'नैमिकानन' आदि को भी साहित्यिक-सांस्कृतिक विनिमय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। श्री उमेश कुमार झा 'ललन' के



सम्पादकत्व में प्रकाशित 'सलहेस वाणी' त्रैमासिक भी नेपालीय पत्रिकाओं में लोकप्रिय रही है।

## हस्तलिखित पत्र-पत्रिकायें

मैथिली में पत्रकारिता खासकर अपनी भाषिक अस्मिता के रक्षा कवच के रूप में होती रही है तथा शिक्षित समुदाय की उद्दाम भाषा-भक्ति ही इसका संबल रही है। मैथिली पत्रकारिता आन्दोलन का एक खास स्वरूप हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाओ के संचालन के रूप में दीख पड़ा और ग्रामाञ्चलों से बहुत सारी ऐसी पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। यद्यपि इन पत्रिकाओं के अवशेष अब कदाचित् ही दीख पड़ें, फिर भी मैथिली पत्रकारिता आन्दोलन की ये विशिष्ट सामग्री रही हैं, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

मैथिली में हस्तलिखित पत्रिकाओं का प्रकाशन विगत सदी के चौथे दशक तक अपनी अस्मिता बनाये रख सकी। इन पत्रिकाओं में दरभंगा की 'हितैषी'; लालगंज की 'अयाची'; लोहना की 'गोविन्द'; पाही (मधुबनी) की 'अक्षत'; कथवार (दरभंगा) की 'किरण'; रैयाम की 'लोचन'; घोघरडीहा की 'मिथिला मानस'; उाढ़ी की 'मित्रवाणी'; कोइलख की 'प्रभात'; नवानी की 'मन्दार'; उजान की 'जानकी'; पूर्णियाँ के ग्रामाञ्चल की 'कौशिकी'; सुपौल की 'सौरभ' आदि प्रख्यात हुई जिनके माध्यम से मैथिली कथा-कविता-आलोचना-निबन्ध आदि विधाएँ पुष्कल परिमाण में प्रकाशित हो बुधजनों का मनोरंजन करती रही। ये पत्रिकाएँ मिथिला के ग्रामाञ्चलों में अपनी भाषा के प्रति व्यामोह, त्यागवृत्ति एवं शिक्षा के प्रति लगाव का सूचक कही जा सकती हैं। इस समय काशी मैथिली के विद्वानों की कर्मभूमि थी। स्वभावतः वहाँ से भी अनेक हस्तलिखित पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता रहा जिनमें कुलानन्द मिश्र द्वारा सम्पादित 'मैथिली सुधाकर'; मैथिली छात्रसंघ, काशी द्वारा प्रायोजित 'मिथिलोदय'; वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' द्वारा प्रायोजित 'भारती'; हरिकान्त झा बक्सी द्वारा प्रायोजित 'वैदेही' आदि परिगणित की जाती रही हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे अनेक हस्तलिखित पत्रिकाओं के प्रकाशन की वृहत् सूची है जो मैथिली के छात्रों द्वारा वार्षिक स्मारिका के रूप में विद्यालयों में प्रायोजित हुए थे।

हस्तलिखित पत्रिकाओं की श्रेणी में पांडू (असम) से प्रकाशित 'सम्पर्क सूत्र' की गणना भी महत्त्वपूर्ण पत्रिका के रूप में की गई है। यह 1966 से पाक्षिक के रूप में विद्यापति गोष्ठी, पाण्डू के मुख पत्र के रूप मे प्रकाशित होती थी जिसे हाथ से लिखकर साइक्लोस्टाइल करा लिया जाता था। यह पत्र मातृभाषा को न्याय्य अधिकार दिलाने के

आन्दोलन का असली प्रहरी बन कर उभड़ा था। 1964 मे श्रीविद्यानाथ झा 'विदित' के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'समन्वय' पत्रिका का एकमात्र अंक लेथो द्वारा छापा गया था। भाषिक राजनीति द्वारा मैथिली क्षेत्र को खण्डित करने के कुचक्र का इसने विरोध किया था। 1978 मे हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रायोजित मासिक 'पाग' का पहला अंक साइक्लोस्टाइल होकर ही छपा था और प्रवासियों द्वारा मातृभाषानुराग का परिचायक बना था। ऋचालोक दरभंगा द्वारा श्री[redacted] के सम्पादकत्व में फोल्डर पत्रिका के रूप मे प्रकाशित छायाप्रति वाली ऋचा एवं सहरसा से डा. महेन्द्र एवं श्रीमती लालपरी देवी द्वारा सम्पादित इस पत्रिका की अनुगामी 'सह-रसा' स्थानीय समाचारों एवं अभिव्यक्तियों के लिये ख्यात हुई।

**वर्त्तमान मैथिली पत्र-पत्रिकायें**

वर्त्तमान में मैथिली में जिन पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है, उनकी स्थिति भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती क्योंकि आज भी जन आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करनेवाली मैथिली माध्यम की कोई दैनिक नहीं है। आज भी मैथिली पत्रकारिता लकीर की फकीर बनी हुई साहित्यकारिता के मानदंड को पूर्ण करने एवं आगे बढ़ाने में ही लगी हुई जान पड़ती है। पत्रिकाओं ने मैथिली की पत्रकारिता में निरन्तरता बनाये रखने का संघर्ष जारी रखा है और इसे ही वर्त्तमान पत्रकारिता की उपलब्धि मानी जा सकती है। ऐसी पत्रिकाओं की परिचिति यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

**आइ-काल्हि / समय-साल**

श्री शरदिन्दु चौधरी के सम्पादकत्व में पटना से प्रकाशित आइ-काल्हि जो अब 'समय-साल' नाम से छप रही है, आज की तिथि में मैथिली का मुखपत्र कही जा सकती है। यह द्वैमासिक पत्रिका है तथा अपनी नियमितता के प्रति सतर्क दीखती है। इसका प्रकाशन 2000 के फरवरी माह से हो रहा है। राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय राजनीति पर सतर्क दृष्टि एवं विवेचन-विश्लेषण की प्रौढ़ता इसकी विशेषता है। रचनात्मक साहित्य के प्रकाशन के साथ ही इसमें मिथिला-मैथिली की समस्याओं पर मन्थन किया जाता रहा है। मैथिली पत्रकारिता को लोकप्रिय बनाने के इसके कुछ शालीनता रहित नुस्खे इसे बिकाऊ पत्रिका बना देती हैं जिनका मैथिली में अभाव रहा है। विषयों की विविधता इसे आकर्षक एवं लोकप्रिय बनाने में समर्थ हुई है।

**भंगिमा**

पटने की नाट्य संस्था 'भंगिमा' एक छमाही पत्रिका का प्रकाशन करती रही है जो लगभग वर्ष 1983 से ही प्रकाशित होती रहीहै। इस पत्रिका के द्वारा समय-समय पर



नाट्यालोचन से सम्बद्ध गंभीर निबन्धों का प्रकाशन किया जाता रहा है जो इसे मैथिली की नाट्य विषयक पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठापित किये हुए है। मैथिली एकांकी एवं गीतनाट्यों के प्रकाशन में इसकी अहम् भूमिका कही जा सकती है। इतर भाषाओं से नाट्यानुवादों को प्रकाशित कर इसने मैथिली नाट्य साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके वर्त्तमान सम्पादक श्री अभय कुमार यादव हैं।

**भारती मण्डन/मंडन निकेत**

यह एक अनियतकालीन मैथिली पत्रिका है जिसके सम्पादक हैं श्री केदारकानन। यह पत्रिका मलाढ़, सुपौल से प्रकाशित होती रही है और इसके दस अंक प्रकाशित हो चुके हैं। पूर्णतः साहित्य को समर्पित यह पत्रिका अपने बहुविध स्तम्भों के कारण लोकप्रिय रही है। प्रो० मायानन्द मिश्र का सम्पूर्ण उपन्यास 'सूर्यास्त' इसी के माध्यम से प्रकाश में आ सका। यह अब अपने नये अभिधान मंडन-निकेत के साथ प्रकट हुई है।

**रचना**

रचना मासिक का प्रकाशन श्रीकालीनाथ झा के सम्पादकत्व में 1984 से दरभंगा से आरम्भ हुआ था जो कुछ अंकों के प्रकाशन के बाद स्थगित कर दो गयी थी। पुनः यह 1989 के जनवरी में त्रैमासिक रूप में उदित हुई और कुछ दिनों तक चलने के बाद स्थगित कर दी गयी। साहित्य की विभिन्न विधाओं की सम्पुष्टि, स्तरीयता, राजनीतिक समीक्षा एवं अन्य स्तम्भों के कारण यह पत्रिका अत्यन्त लोकप्रिय रही है। वर्ष 2001 से पुनः इसका नियमित प्रकाशन हो रहा है किन्तु साहित्यिक राजनीति के कारण इसपर गुटबन्दी का आक्षेप भी लगाया जाता रहा है। वर्त्तमान में श्रीविश्वनाथ इसके सम्पादक हैं।

**मिथिलाञ्चल सम्पर्क**

यह पत्रिका मिथिलांचल विकास परिषद, लहेरियासराय की मुख पात्रिका रही है। इसके द्वारा वर्ष 1980 से ही वार्षिक स्मारिका का प्रकाशन होता रहा है जिसमें मिथिलांचल के विभिन्न समस्याओं पर विद्वानों के निबन्धों का प्रकाशन होता रहा है। साहित्यिक निबन्धों के साथ ही इसमें सांस्कृतिक-आर्थिक निबन्धों को विशेष प्रश्रय दिया जाता रहा है। परवर्त्ती काल में यह पत्रिका त्रैमासिक रूप में प्रकाशित होती रही है। इसके द्वारा प्रायोजित यात्री नागार्जुन विशेषांक, समकालीन मैथिली उपन्यास विशेषांक आदि इसकी खास उपलब्धियाँ रही हैं। इसके सम्पादकों में श्रीरमानन्द रेणु, डा० श्रीउमाकान्त एवं श्री सुधाकर चौधरी का नाम उल्लेखनीय है।

## मैथिली अकादमी पत्रिका

मैथिली अकादमी, पटना के तत्त्वावधान में यह पत्रिका 1980 ई० से ही संचालित होती रही है। इसका स्वरूप द्वैमासिक का रहा है किन्तु इसकी निरन्तरता बाधित रही है। पूर्णत: साहित्यिक-सांस्कृतिक विकास को समर्पित यह पत्रिका मैथिली की एकमात्र सरकारी पत्रिका कही जा सकती है। इस पत्रिका के द्वारा अनेक विशेषांकों का प्रकाशन होता रहा है जो स्थायी मूल्य के हैं। अभी हाल में इसका लोक संस्कृति अंक प्रकाशित हुआ है।

## कर्णामृत

1981 से श्रीराजनन्दन लालदास के सम्पादन में यह त्रैमासिक पत्रिका अपनी निरन्तरता बनाते हुए अद्यावधि प्रकाशित होती रही है। यह कर्णगोष्ठी, कलकत्ता की मुख पत्रिका है। इसके द्वारा मैथिली साहित्य के सम्वर्द्धन में विशिष्ट योगदान दिया जाता रहा है! मुंशी रघुनन्दन दास, मणिपद्म आदि रचनाकारों के साहित्य को प्रकाशित कर इसने प्राचीन एवं अर्वाचीन रचनाकारों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को समक्ष लाने में सराहनीय योगदान दिया है! इसने अनेक विशेषांकों की योजना की है जो महत्त्वपूर्ण हैं। खासकर इसके शारदीय विशेषांक अन्य अंकों की अपेक्षा संपुष्ट हुआ करते हैं। सम्प्रति इसका सौवाँ अंक प्रकाशित हुआ है।

## चेतल मिथिला-मिथिला महान

नव्य मानवतावादी चेतना के अग्रदूत के रूप में आनन्द मार्ग की मैथिली पत्रिका 'चेतल मिथिला' नाम से श्री अर्जुन नारायण चौधरी के सम्पादकत्व में पटने से प्रकाशित हुई थी जिसके दो-तीन अंक मात्र प्रकाशित होने के बाद इसका नाम मिथिला महान कर दिया गया। इस नाम से भी इसके चार-पाँच अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य मैथिली के माध्यम से आनन्दमार्ग की विचारधारा का प्रसार करना रहा है। इसने रचनात्मक साहित्य के सम्वर्द्धन में भी पूर्ण योगदान दिया है तथा अपनी स्तरीयता बनाये रखी है।

## श्रीमिथिला

यह एक द्वैमासिक पत्रिका है जो मिथिला चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, कोलकाता द्वारा श्रीमहेन्द्र हजारी के सम्पादकत्व में 2003 ई० से प्रकाशित होती रही है। यद्यपि इसकी आवृत्ति में अनियमितताएँ रही हैं और यह कभी द्वैमासिक तो कभी चतुर्मासिक के रूप में भी प्रकाशित होती रही है, फिर भी इसके प्रकाशन में अभी



निरन्तरता दीख पड़ती है। इस पत्रिका की खास विशेषता यह है कि इसने साहित्य के स्थान पर आर्थिक निबन्धों के प्रकाशन एवं इस माध्यम से मिथिला की सर्वाङ्गीन उन्नति को लक्ष्य बनाया है।

## भूमिजा-मिथिमालिनी

भागलपुर के मिथिला परिषद् द्वारा एक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 2002 से किया जा रहा है जो परिषद् का मुख पत्र तो है ही, मैथिली साहित्य-संस्कृति से सम्बन्धित रचनाओं को भी प्रकाशित करता रहता है। इसके प्रथम सम्पादक डा० श्रीप्रेमशंकर सिंह रहे हैं तथा इसका नाम उस समय 'भूमिजा' रखा गया था। बाद में इसी पत्र का नाम बदलकर मिथिमालिनी कर दिया गया है और इसके वर्त्तमान सम्पादक श्रीशिवप्रसाद यादव हैं। अङ्ग क्षेत्र में मैथिली के जागरण की दिशा में इस पत्र का प्रमुख स्थान रहा है।

## पूर्वोत्तर मैथिल

यह त्रैमासिक पत्रिका गौहाटी से श्री सत्यानन्द पाठक के सम्पादकत्व में निरन्तरता बनाये हुए है और वर्ष 2001 से अद्यावधि प्रकाशित होती रही है। मैथिली साहित्य के संवर्द्धन एवं मैथिली के विकास के लिये समाचार-विचारों के प्रसारण की दृष्टि से प्रवासी मैथिलों द्वारा संचालित पत्रिकाओं में इसने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है तथा पर्याप्त लोकप्रिय हुई है। इसके माध्यम से सम्पादकीय औपन्यासिक कृति 'हम गाम लेल छलहुँ' का प्रकाशन इसकी खास उपलब्धि कही जा सकती है।

## आरम्भ

नवम्बर 1982 से श्री राजमोहन झा, अग्निपुष्प और केदार कानन के सम्पादकत्व में पटना से यह पत्रिका त्रैमासिक के रूप मे प्रकाशित होती रही है। परवर्त्ती काल में इसने अपना स्वरूप अनियतकालीन बना लिया और यदाकदा प्रकाशित होती रहती है। फिर भी इसकी निरन्तरता बनी हुई है। इसके द्वारा नवलेखन को प्रोत्साहन दिया जाता रहा है। विभिन्न साहित्यकारों एवं डा० शैलेन्द्र मोहन झा पर केन्द्रित अंक इसकी विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं।

## चेतना-खोज-खबरि-घर बाहर

चेतना समिति, पटना अपने मुखपत्र के रूप में चेतना नाम के पत्रिका का प्रकाशन करती थी जो परवर्त्तीकाल में खोज-खबरि और अब 'घर बाहर' नाम से पूर्णत: साहित्यिक पत्र के रूप में प्रकाशित हो रही है। यह त्रैमासिक पत्रिका है और इसके सम्पादक क्रमश: उदयचन्द्र झा 'विनोद', अशोक, बासुकीनाथ झा आदि रहे हैं।

**सन्धान**

श्री अशोक द्वारा सम्पादित यह पत्रिका वस्तुतः अनियतकालीन संकलन है जिसने आधुनिक मैथिली साहित्य की कविता-कथा को विकसित करने का प्रयास किया है। 1997 से 2000 ई० के बीच इसके चार अंक निकल सके हैं। इसका प्रकाशन स्थल पटना रहा है।

**मैथिली सन्देश**

यह अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद की बुलेटिन है जो परिषद् के सदस्यों को तत्कालीन गतिविधियों की सूचना प्रदान करती रहती है। इसके सम्पादक डा० घनाकर ठाकुर रहे हैं। परिषद् के क्रिया कलापों की जानकारी एवं समसामयिक मैथिली आन्दोलन को गति प्रदान करने की दृष्टि से इसे महत्त्व दिया जा सकता है। इसका प्रकाशन राँची से होता रहा है।

**लोकभूमि**

लोकभूमि त्रैमासिक वर्ष 2004 से श्रीउदयचन्द्र झा 'विनोद' के सम्पादकत्व में रहिका से प्रकाशित हो रही है। यह साहित्य प्रधान पत्रिका है और मैथिली पत्रकारिता के क्षेत्र में गतानुगतिकता का ही प्रतीक मानी जा सकती है।

**हिलकोर**

मैथिली सेवा संस्थान, अनुपम शिक्षा निकेतन, खगड़िया से श्री प्रभाकर प्रभात के सम्पादकत्व में यह त्रैमासिक पत्र वर्ष 2005 के जून माह से आरम्भ होकर वर्त्तमान तक प्रकाशित हो रही है। यद्यपि यह एक सामान्य साहित्यिक पत्र ही है फिर भी मैथिली पत्रकारिता में क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से इसे महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

**सिया-धिया**

यह एक साप्ताहिक पत्रिका है जिसका मात्र दो अंक देखने का मौका मिला है। अतएव इसे भी केवल प्रयोग की श्रेणी में ही रखा जा सकता है। इसका प्रकाशन मधुबनी से हुआ है। श्री चन्द्रमोहन झा 'पड़वा' इसके सम्पादक रहे हैं। सम्पादक बनने की लोलुपता ही इसका लक्ष्य जान पड़ता है। इसका प्रथम अंक 9 अप्रैल 2005 को प्रकाशित हुआ और दूसरा ही अंक संयुक्तांक रहा जो 16-23 अप्रैल को प्रकाशित हुआ। यह मूलतः समाचार प्रधान रही है तथा सम्प्रति स्थगित है।



**धरतीक बेटी**

जानकी नवमी, 2005 के अवसर पर प्रकाशित यह वार्षिक पत्रिका प्रयोगांक के रूप में श्रीचन्द्रेश के सम्पादकत्व में दरभंगा से प्रकाशित हुई है। इसे अनियतकालीन संकलन की श्रेणी में रखा जा सकता है।

**जखन-तखन**

दरभंगा से प्रकाशित मैथिली की यह पत्रिका अनियतकालीन के रूप में ही श्रीविभूति आनन्द के सम्पादन में प्रकाशित हो रही है। स्तरीय रचनाओं के प्रकाशन द्वारा आधुनिक मैथिली साहित्य की श्रीवृद्धि को यह पत्रिका समर्पित है। प्रत्येक अंक में एक नाट्यकृति का प्रकाशन कर यह मैथिली नाट्यविधा को संपुष्ट करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**हालचाल**

सितम्बर 2005 से शुभंकरपुर, दरभंगा से श्रीमणि कान्त झा के सम्पादकत्व में हालचाल नाम के मैथिली मासिक का दूसरा प्रयोग प्रकाशित होना शुरू हुआ है। इसे मिथिला का समवेत स्वर कहा गया है तथा इसका आप्त वाक्य है-'आगि चद्दरि तर ने झाँपल जा सकैए। नाग ठुट्ठी सँ ने नापल जा सकैए।' इस पत्र ने लोकजीवन में राजनीतिक चेतना जगाने को अपना लक्ष्य कहा है। स्वभावतः इसमें राजनीतिक-सामाजिक एवं आर्थिक निबन्धों को प्रश्रय मिला है। फिर भी साहित्य की विविध रचनात्मक विधाओं को भी यह संवर्द्धित करने के गतानुगतिक मार्ग को नहीं छोड़ पायी है। मैथिली नवलेखन को प्रोत्साहन भी इसका उद्देश्य दीखता है।

**मिथिला दर्पण**

सितम्बर-अक्टूबर 2005 से आरंभ इस पत्रिका की आवृत्ति द्वैमासिक कही गयी है। यह मैथिली पत्रकारिता के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में डा० श्रीमती रमा झा के सम्पादन में मुम्बई से प्रकाशित हो रही है। इसे मिथिलाक सांस्कृतिक आत्मप्रकाश कहा गया है। स्वभावतः इस पत्रिका का लक्ष्य मुम्बईवासी मैथिल समाज की अभिव्यक्ति रही है। महानगरीय चाकचिक्य से युक्त इस पत्रिका ने बहुआयामी लेखन को प्रश्रय दिया है।

पूर्व में इसी नाम से एक मासिक पत्र श्री सुनील सौरभ के सम्पादकत्व में 1996 में पटना से प्रकाशित होने की सूचना है।

## विद्यापति टाइम्स

समाचार-विचार पर आधारित मैथिली पत्रिका *विद्यापतिटाइम्स* के प्रायोजक एवं सम्पादक हैं श्री विनोद कुमार। यह पाक्षिक पत्र है तथा अललपट्टी दरभंगा से प्रकाशित होती रही है। अक्टूबर द्वितीय पक्ष 2005 से आरंभ इस पत्रिका के प्रारंभिक तीन अंक प्रयोगांको के रूप में प्रकाशित हुए तथा 16 दिसम्बर से 1 फरवरी के बीच इसके क्रमिक चार अंक समयबद्धता का पालन करते हुए प्रकाशित किये जाते रहे हैं। 'देसिल वयना सभ जन मिट्ठा' इसका विरुद है और इसके प्रत्येक अंक के पहले पृष्ठ पर एक मिथिला पेंटिंग दिया जाना विशिष्टिता। 'स्वाधीन कलम सँ' शीर्षक से लिखित इसका सम्पादकीय मिथिला-मैथिल-मैथिली एवं राष्ट्र-प्रान्त के समस्याओं की ओर जनसाधारण एवं सत्ता पक्ष का ध्यानाकर्षण कराने, 'मिथिला की आवाज' बनने की क्षमता रखता है। साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों पर पैनो नजर, व्यंग्य-वक्रोक्तिपूर्ण स्तंभ-नियोजन तथा 'उधोजीक उधियान' शीर्षक बबजिया बोली युक्त स्तंभ इसे आकर्षक बनाने में सक्षम साबित हुए हैं।

मैथिली पत्र-पत्रिका के सौ वर्षों की उपलब्धियों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुत: मैथिली पत्रकारिता का इतिहास प्रयोगों का ही इतिहास रहा है। इस क्षेत्र में अनेकानेक प्रयोग हुए हैं। वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, चतुर्मासिक, त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक से लेकर दैनिक पत्रों तक का प्रयोग मैथिली पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन क्रम में किये गये हैं। फिर भी प्रयोग सर्वथा सफल नहीं कहे जा सकते, क्योंकि आज की तिथि में भी मिथिला भू भाग की भाषा-संस्कृति, कला-कौशल, जीवन-पद्धति, शिक्षा-स्वास्थ्य, यातायात की समस्याओं का संवाहक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना के अग्रदूत एवं लोकमत के अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इसका विकास नहीं हो पाया है।

मैथिली पत्र-पत्रिका के विकास के लिये मिथिला के मनीषियों से लेकर प्रवास में रहनेवाले मैथिलों द्वारा निरन्तर प्रयत्न किये जाते रहे हैं और मैथिली पत्रकारिता में निरन्तरता किसी न किसी रूप में बनी हुई दीखती है। फिर भी इन प्रयत्नों को छिटपुट प्रयोग मात्र कहा जा सकता है और लोकजीवन में पत्रिकाओं का प्रवेश आज भी बाधित है। अवश्य ही पत्रकारिता मिथिला के प्रबुद्ध समुदाय के लोकरंजन एवं चिन्तन क्रम को प्रभावित करती रही है।



मैथिली पत्रकारिता में हुए बहुविध प्रयत्नों के फलस्वरूप एक तरफ जहाँ अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष पत्रकारिता का प्रयत्न होता रहा है तथा मैथिली पत्रों को सर्वांङ्गपूर्ण बनाने का प्रयास हुआ है, वहीं इनकी अल्पजीविता इनके स्थायित्व की सबसे बड़ी बाधा बनी रही है।

मैथिली पत्रकारिता में हुए बहुविध प्रयोगों के फलस्वरूप अत्यन्त लघु आकार-प्रकार की मिनी पत्रिका से लेकर शुभ्र कलेवर एवं साज-सज्जाओं से परिपूर्ण पत्रिकाओं तक का विकास हुआ है। समाचार-विचार के साथ-साथ साहित्य के प्रचार-प्रसार से युक्त पत्रिकाओं के दौर का युग समाप्त हो चला है और समाचार-विचार के लिये पृथक् एवं साहित्य के लिये पृथक् पत्रिकाओं का भी विकास हुआ है। मिथिला की अर्थ-व्यवस्था, मैथिली क्षेत्र की राजनीतिक सहभागिता-आध्यात्मिक विचार-विनिमय आदि के लिये तो वर्गीय पत्रों का विकास हुआ ही है, अब साहित्य के भी विभिन्न विधाओं के लिये अलग-अलग पत्रकारिता को महत्त्व प्रदान किया जाने लगा है।

फिर भी मैथिली पत्रकारिता ने अपने दीर्घ प्रकाशन अवधि के बीच जो महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं, उनमें एकमात्र आधुनिक मैथिली साहित्य का विकास ही सर्वाधिक प्रशस्त उपलब्धि कही जा सकती है। इसके माध्यम से एक ओर जहाँ प्राचीन मैथिली के साहित्यिक का प्रकाशन हुआ है, वहीं आधुनिक मैथिली की समस्त विधाओं को विकसित एवं प्रकाशित होने का मौका मिला है। परिणामस्वरूप आज की मैथिली साहित्य राष्ट्रीय क्षितिज पर अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करने में समर्थ हुई है। साहित्य की समस्त विधाओं के विकास, अनुसन्धान-आलोचना के द्वारा उनपर प्रकाश एवं नवलेखन में विभिन्न वादों के प्रसार की दृष्टि से मैथिली पत्रकारिता का अमूल्य योगदान रहा है।

मैथिली पत्रकारिता आरम्भ से ही मैथिली भाषा के क्षेत्र में आन्दोलन का माध्यम रही है। इसने मैथिली लिपि के संरक्षण की दिशा में प्रयास किये, जिसके कारण आज भी तिरहुता लिपि जानने-पढ़नेवालों की संख्या बची हुई है और मैथिली के प्राचीन हस्तलेख आज भी इतिहास की वस्तु नहीं बन पाये हैं। मैथिली के वर्तनी को भी स्थिर करने में मैथिली पत्रकारिता की अहम् भूमिका रही जिससे वृहत्तर मैथिली क्षेत्र जिसके अन्तर्गत अनेकानेक उपभाषाएँ हैं, सम्मार्जित लेखकीय भाषा प्राप्त कर सकने में समर्थ हुई है। मैथिली को हिन्दी द्वारा आत्मसात् किये जाने की प्रक्रिया को पत्रों के माध्यम से वैचारिक आन्दोलन चलाकर ही निरस्त किया जा सका है। आज मैथिली विद्यालयों से लेकर

विश्वविद्यालयों, साहित्य अकादेमी, नेशनल बुक ट्रस्ट आदि के साथ ही संविधान की अष्टम् अनुसूची में अन्तर्भुक्त है। इसके लिये सर्वाधिक जनजागरण का श्रेय मैथिली पत्रकारिता को ही जाता है। यह मैथिली पत्रकारिता आन्दोलन का ही परिणाम है कि दैनिक मैथिली पत्र के अभाव में इस भाषा के लेखन-अनुवाद को आज, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, प्रभात खबर, राँची एक्सप्रेस आदि प्रतिष्ठित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिकों में स्थान दिये जाने की स्पृहा बनी है और संतुष्ट हो रही है।

मैथिली पत्रकारिता की असफलता के मूल में एक ओर जहाँ सुनियोजित व्यावसायिक बुद्धि से पत्र का संचालन नहीं किया जाना रहा है, वहीं दूसरी ओर मिथिला के बहुसंख्यक समाज का अशिक्षित होना एवं अपनी भाषा के प्रति सजग दृष्टि का अभाव रहना भी रहा है। प्रारम्भ से ही मैथिली पत्रकारिता में पारस्परिक दोषारोपण के प्रति सम्पादकों का लगाव देखा जाता रहा है जिसके कारण पत्रिकायें स्वस्थ वातावरण का निर्माण नहीं कर पायी हैं। निष्पक्षता के प्रति आज भी मैथिली पत्रिकायें प्रतिबद्ध नहीं दीखती जिसके कारण गोलबन्दी को प्रश्रय मिलता है और अन्ततः पत्रकारिता साहित्यकारों की गुटबन्दी का शिकार होकर मृत हो जाया करती हैं। आत्मप्रचार एवं आत्मतुष्टि मैथिली के पत्रकारों का समान्य लक्ष्य रहा है जो स्वस्थ पत्रकारिता का बाधक रहा है।

फिर भी मैथिली पत्र-पत्रिका के विगत सौ वर्ष मिथिला-मैथिल-मैथिली के लिये चलनेवाले संघर्षों का इतिहास कही जा सकती है और यह आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में सामाजिक संबल पर आधारित समाचार-विचार प्रधान दैनिक का विकास हो सकेगा, जो उपेक्षित क्षेत्र मिथिलाञ्चल की भाषा ही नहीं प्रत्युत् समाज के आशाओं-आकाक्षाओं का प्रतिनिधि माध्यम बन सकेगी। मैथिली पत्रकारिता के जनक विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा का स्वप्न तभी साकार हो सकेगा, जब मैथिली पत्र-पत्रिकायें समाज से जुड़कर उसे स्वस्थ, सबल बनाने के अपने दायित्व को पूर्ण करने में सफल हो सकेंगी।





## *About his Published Works*

*Yoganand Jha's Loka Jivana O Loka Sahitya (1986) deserves to be mentioned on the critical analysis of folk literature. It is very informative and useful.*
*Alekha-Sanchayana (2002) is a research-oriented work of Yoganand Jha, consisting of nine titles of interest. The author concentrates on folklore, language and literature, revealing dark, untrodden areas of literature. Marked by originality and keen observation, the work goes a long way towards enriching the study of folklore; his analysis of the figures of Radha and Parvati in Vidyapati, Woman in Suman's lyrics and Sri Amar's achievement are specially attractive.*

*History of Modern Maithili Literature*
**Dr. Devakant Jha**
*Sahitya Akademi, New Delhi, 2004, P-328, 356.*